वार्षिक रिपोर्ट

2014-2015

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
लखनऊ

आवरण चित्र : *सीबा स्पीसीओसा* सिन. *कोराईसिया स्पीसीओसा*

छायाचित्र : डॉ० एल०बी० चौधरी
वरिष्ठ वैज्ञानिक,
सी०एस०आई०आर० – एन०बी०आर०आई०, लखनऊ

प्रकाशक:

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

पूर्वी विंग, तृतीय तल, 'ए' ब्लॉक,
पिकप भवन, गोमती नगर, लखनऊ
फोन: 0522-4006746, 2306491 फैक्स: 0522-4006746
वेबसाइट: http://www.upsbdb.org
ईमेल: upstatebiodiversityboard@gmail.com

विषय सूची

1.	प्राक्कथन	1
2.	बोर्ड की बैठकें	4
3.	जैवविविधता प्रबंधन समितियाँ (बी०एम०सी०)	7
4.	जन जैवविविधता पंजी (पी०बी०आर०)	9
5.	प्रकृति बस : उत्तर प्रदेश की जैवविविधता पर एक चल प्रदर्शनी	12
6.	अनुसंधान परियोजनाएँ	19
7.	अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस 22 मई 2014	45
8.	जागरूकता कार्यक्रम	50
	क. मेढक बचाओ दिवस, 26 अप्रैल, 2014	50
	ख जैवविविधता उत्सव 16–21 मई, 2014	56
	ग. विश्व पर्यावरण दिवस, 05 जून, 2014	69
	घ. अन्तर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस, 06 सितम्बर, 2014	71
	ङ साइंस एक्सप्रेस, जैवविविधता विशिष्ट (एस०ई०बी०एस०) 8–9 सितम्बर, 2014	75
	च. वन्य प्राणि सप्ताह 01–07 अक्टूबर, 2014	75
	छ. विश्व वेटलैण्ड्स दिवस, 02 फरवरी, 2015	89
	ज. विश्व गौरैय्या दिवस 20 मार्च, 2015	100
9.	प्रशिक्षण व कार्यशालाएँ	111
10.	मानव संसाधन विकास	123
11.	प्रकाशन	124
12.	वित्त एवं लेखा	125
13.	समाचार पत्रों से	130

प्राक्कथन

परिचय

जैवविविधता जीवन की वायु, स्थल एवं वेटलैण्डस नदियों व समुद्रों मे रहने वाले पादप व प्राणि प्रजातियों की महान विविधता है।

21वीं शताब्दी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दों मे से एक जैवविविधता का संरक्षण करना है। यह चिरन्तन (सस्टेनेबल) विकास एवं जलवायु परिवर्तन प्रदूषण व कूड़ा निस्तारण जैसे पर्यावरणीय मुद्दों अन्तरंग रूप से जुड़ी समस्याओं की हल की कुंजी है।

पौधे व पशु जीवन के लिए अपरिहार्य है। ये भोजन औषधियां एवं वस्त्र व आवास निर्माण एवं साज सज्जा हेतु सामग्री उपलब्ध करवाते है। पौधे बाढ़ नियन्त्रण, भूक्षरण रोकने एव वायु एवं जल से प्रदूषकों को छानने में सहायता करते है।

हमारी समृद्धि हेतु जैवविविधता अतिआवश्यक है। प्राकृतिक संसार भू-दृश्यों का संजाल एवं देश में भ्रमण हेतु हमारे इच्छित स्थल है। अपने बगीचों व स्थानीय पार्को में भी हम वन्यजीवों को अत्यधिक सम्मान देते हैं। जंगली पौधे व पशु हमारे प्राकृतिक जीवन चक्र एवं बदलते मौसम का अनुभव याद दिलाते हैं। यह पर्यावरण के स्वास्थ्य के लिए हमारे उत्तरदायित्व को केन्द्र में लाते हैं।

उत्तर प्रदेश एक विहंगम दृष्टि

1 मार्च 2011 को 199,581,477, व्यक्तियों के साथ उत्तर प्रदेश देश की सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है। उत्तर प्रदेश यदि पृथक प्रदेश होता तो यह जनसंख्या की दृष्टि से चीन, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं इण्डोनेशिया के बाद पाँचवां सबसे बड़ा देश होता।

भारतीय पौराणिक आख्यान में वर्णित दो सर्वाधिक पवित्र नदियों गंगा व यमुना से सिंचित हमारे प्रदेश की सीमाएँ पूर्व में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश, पश्चिम में राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश एवं हरियाणा, उत्तर में उत्तराखण्ड तथा उत्तरी सीमा नेपाल राष्ट्र को छूती है। जिससे भारतीय रक्षा में इसका रणनीतिक महत्व है। इसका क्षेत्रफल 2,36,286 वर्ग कि०मी० है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का चौथा सबसे बड़ा प्रदेश है। केवल परिमाण की दृष्टि से इसका क्षेत्रफल फ्रांस से आधा पुर्तगाल का तीन चौथाई, आयरलैण्ड का चार गुना स्विटजरलैण्ड का सात गुना, बेल्जियम से दस गुना व इग्लैण्ड के क्षेत्रफल में थोड़ा अधिक है।

उत्तर प्रदेश की पादप विविधता

2932 पादप प्रजातियों के साथ उत्तर प्रदेश की पादप विविधता देश के 6.78 प्रतिशत पादपों का प्रतिनिधित्व करती है। द्वितीय स्रोत से एकत्र किए गए प्रारम्भिक आकड़े उ०प्र० में पादप साम्राज्य के सम्बन्ध में निम्न प्रेक्षण सूचित करते हैं:—

ikni lkekT; dk leg	fo'o esa iztkfr;ksa dh la[;k	Hkkjr esa iztkfr;ksa dh la[;k	mRrj izns'k esa iztkfr;ksa dh la[;k	fo'o ds lkis{k mÙkizÙ esa iztkfr;ksa dk izfr'kr	Hkkjr ds lkis{k mÙkizÙ dh iztkfr;ksa dk izfr'kr
काई	40,000	7,182	301	0.75	4.19
कवक	72,000	14,588	935	1.29	6.40
लाईकेन	13,500	2,268	135	1.0	5.95
ब्रायोंफाईट्स	16,600	2,451	72	0.43	2.93
टेरीडोफाइट्स	10,000	1,236	41	0.41	3.31
जिम्नोस्पर्म	650	69	06	0.92	8.69
एंजियोस्पर्म	2,50,000	17,643	1,442	0.57	8.17
;ksx	4]02]750	45]437	2]932	0-72	6-45

स्रोतः सेनी एट आल (2011) पूर्वी उत्तर प्रदेश के विशिष्ट संदर्भ में उत्तर प्रदेश की पादप विविधता, उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा प्रकाशित पूर्वी उत्तर प्रदेश के विशिष्ट सन्दर्भ मे उ०प्र० पादप विविधता संजीव नायक एवं डी०के० उप्रेती (2013) उत्तर राज्य जैवविविधता बोर्ड लखनऊ द्वारा प्रकाशित उत्तर प्रदेश के लाईकेन्स।

उत्तर प्रदेश में प्राणि विविधता

अकशेरूकी व कशेरूकी जीवों की 2387 प्रजातियों के साथ उत्तर प्रदेश की प्राणि विविधता देश के 2.76 प्रतिशत प्राणि प्रजाति विविधता का प्रतिनिधित्व करती है। राज्य की प्राणि विविधता निम्न सारणी में दर्शाई गई है :—

पशु साम्राज्य के समूह	विश्व में प्रजातियों की संख्या	भारत में प्रजातियों की संख्या	उत्तर प्रदेश में प्रजातियों की संख्या	विश्व के सापेक्ष उ०प्र० में प्रजातियों का प्रतिशत	भारत के सापेक्ष उ०प्र० में प्रजातियां का प्रतिशत
प्रोटोजोआ (मुक्त जीवी+परजीवी)	31,250	3,500	41	0.13	1.17
नोमाटोड (समस्त) मौलस्का	30,028	2,902	140	0.46	4.82
मौलस्का	66,535	5,169	47	0.07	0.90
आरथ्रोपोडा (इनसेक्टा)	10,20,007	63,423	1,445	0.14	2.27

आरथ्रोपोडा (आराकिन्डा)	73,451	5,850	15,	0.02	0.25
मौलस्का (मीठा जल)	35,000	1,129	47	0.001	4.16
पिसेस्	32,120	3,022	152	0.47	5.02
एम्फीबिया	6,771	342	25	0.36	7.30
रेप्टीलिया	9,230	526	77	0.83	14.63
एव्स	9,026	1,233	358	3.96	29.03
मैमेलिया	5,416	423	87	1.60	20.56
;kx	13]18]834	87]519	2]434	0-18	2-78

स्रोतः वी०डी० हेगडे एवं के० वेकटरमन (2014) उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड लखनऊ द्वारा प्राकशित इन्वेटरी ऑफ फॉनल डाईवर्सिटी ऑफ उत्तर प्रदेश।

जैवविविधता अधिनियम, 2002

दिनांक 5 फरवरी, 2003 को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा जैवविविधता अधिनियम 2002 अधिसूचित किया गया। जैवविविधता अधिनियम भारतीय जैवविविधता एवं इसके संरक्षण, दुरुपयोग के विरुद्ध सुरक्षा, पहुँच पर नियन्त्रण एवं जैवविविधता व सम्बद्ध ज्ञान का चिरन्तन (सस्टेनेबल) उपयोग हेतु विधिक संरचना प्रदान करती है। जैवविविधता नियमावली 15 अप्रैल 2004 को अधिसूचित हुई। अधिनियम की धारा 22 के अनुसार राज्य जैवविविधता बोर्डों के कार्य में शामिल है।

शासनादेश सं 1498/14–05–2006–57/2006 दिनांक 20 सितम्बर 2006 द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की स्थापना हुई। अधिसूचना संख्या 570/ XIV–5–2010–57/2006 दिनांक अप्रैल, 9, 2010 द्वारा उ०प्र० राज्य जैवविविधता नियमावली 2010 प्रख्यापित हुई।

बोर्ड की बैठकें

दिनांक 07.04.2014 को बारहवीं बोर्ड बैठक

12वीं बोर्ड बैठक, उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड के अध्यक्ष श्री वी०एन० गर्ग की अध्यक्षता मे दिनांक 7 अप्रैल 2014 की आहूत की गई। बैठक में निम्न निर्णय लिए गयेः–

(1) बोर्ड द्वारा वर्ष 2014–15 में निम्न दो नवीन परियोजनाओं हेतु अनुमोदन दिया गया।
   (क) एन एनोटेड कलर्ड चेकलिस्ट ऑफ बटरफ्लाईज ऑफ उत्तर प्रदेश, इण्डिया।
   (ख) टेक्सोनामिक स्टडी ऑफ द ट्री फ्लोरा ऑफ उत्तर प्रदेश।

(2) प्रिपरेशन ऑफ बेस लाईन इन्फारमेशन ऑफ फानल डाइवर्सिटी आफ उत्तर प्रदेश इण्डिया शीर्षक परियोजना के 31.05.2014 तक विस्तार को अनुमोदित किया गया।

(3) वर्ष 2014–15 के लिए प्राक्कलित बजट प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 23.07.2014 को बोर्ड की 13वीं बैठक

दिनांक 23.07.2014 को उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड के अध्यक्ष श्री वी0एन0 गर्ग की अध्यक्षता में 13वीं बोर्ड बैठक आहूत की गई। इस बैठक में निम्न निर्णय लिये गएः–

1. bfPNr vuefr&
   (क) बोर्ड ने 75 जैवविविधता प्रबन्धक समितियों एवं 75 जनपदों के एक–एक गाँव का जन जैवविविधता पंजिका तैयार करने हेतु संकल्प पत्र व निर्देश के प्रस्ताव को बोर्ड का अनुमोदन।
   (ख) बोर्ड ने उ०प्र० में कन्नौज जनपद के लिए एक पृथक जन जैवविविधता पंजिका तैयार करने का निर्देश दिया।
2. वर्ष 2013–14 का अंकेक्षित व्यय का अनुमोदन।
3. वर्ष 2014–15 का अंकेक्षित व्यय का अनुमोदन।
4. वानिकी प्रशिक्षण संस्थान कानपुर, डॉ० राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय लखनऊ एवं लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ को शामिल करते हुए जैवविविधता के विभिन्न पक्षों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का अनुमोदन प्रदान किया गया।
5. उत्तर प्रदेश में चिरोप्टेरान विविधता एवं संरक्षण परियोजना की लागत में वृद्धि किये बिना रु0 2,10,000 के पुनर्वियोग का प्रस्ताव बोर्ड द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया।
6. उ०प्र० राज्य जैवविविधता का एक ही समय हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं मे लोगों बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया।

दिनांक 28.11.2014 को बोर्ड की 14वीं बैठक

बोर्ड की 14वीं बैठक दिनांक 28.11.2014 को बोर्ड के अध्यक्ष श्री वी0एन0 गर्ग की अध्यक्षता में आहूत की गई। बैठक में निम्न निर्णय लिये गएः–

(1) vk;kftr izf'k{k.k&

(क) लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ में दिनांक 30 जुलाई, 2014 को जैवविविधता व इसका सरक्षण विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

(ख) डा० राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय लखनऊ में दिनांक 29 अगस्त 2014 जैवविविधता विधि एवं नीति विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

(ग) लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ में दिनांक 20 सितम्बर, 2014 को जैवविविधता व इसका संरक्षण विषय पर प्रशिक्षण आयोजित।

(घ) डॉ0 राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय लखनऊ में दिनांक 27 सितम्बर 2014 को जैवविविधता विधि एवं नीति विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

(ड) वानिकी प्रशिक्षण संस्थान कानपुर मे दिनांक 11–12 नवम्बर 2014 को जैवविविधता विधि एवं नीति प्रशिक्षण आयोजित किया गया ।

2. वर्ष 2014–15 के लिए परियोजना का प्रस्ताव अनुमोदित किया। बोर्ड ने निर्देश दिया कि परियोजना के कोष का उपयोग जन जैवविविधता पंजिका तैयार करने मे ही किया जाए।

3. अक्टूबर 2014 तक वास्तविक व्यय का अनुमोदन किया गया।

दिनांक 24.03.2015 को बोर्ड की 15 वीं बैठकः-

बोर्ड की 15 वीं बैठक दिनांक 24 मार्च 2015 को श्री वी0एन0 गर्ग की अध्यक्षता मे आयोजित की गई। बैठक में निम्न निर्णय लिए गएः—

1. आगामी वर्ष में विश्व वेटलैण्ड दिवस समारोह पूर्वक मनाए जाने तक बोर्ड के विशेष सदस्य को आमन्त्रित किये जाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया।
2. निर्णय लिया गया-प्रकृति मोबाईल बस कृषि विश्वविद्यालयों का भ्रमण कर तथा विभिन्न कृषि मेलों मे जैवविविधता प्रदर्शित की जाए ताकि प्रदर्शनी से अधिक से अधिक व्यक्ति लाभान्वित हों
3. वर्ष 2015—16 के प्रस्तावित व्यय अनुमोदित किया गया।
4. निम्न परियोजनाओं के विस्तार की अनुमति प्रदान की गई।
   (क) असेसमेण्ट ऑफ से जैस बेस्ट ऑन माइक्रो मॉरफोलोजिकल के रेक्टरस फूड वेल्यू एण्ड पोटेशियम रोल इन फाईटो—रेमीडिएशन इन वेटलैण्ड्स ऑफ उत्तर प्रदेश नामक परियोजना को 31.03.2015 तक विस्तार दिया गया।
   (ख) इन्वेटराईजेशन ऑफ एरोमेटिक प्लाण्ट स्पीसीज, देयर स्टेट एण्ड एसेसमेण्ट ऑफ एरिया अण्डर कल्टीवेशन ऑफ एसेन्शियल ऑयल बियरिंग क्रॉप्सइन समडिस्ट्रिक्ट्स ऑफ अपर गैजेटिंग प्लेन्स' नामक परियोजना को 31.03.2015 तक विस्तार दिया गया।
   (ग) फिश डाईवर्सिटी ऑफ राम गंगा एण्ड बरवीरा लेक कम्परीजन ऑफ प्रेजेण्ट स्टेटस बिन्दु प्रिस्टाईन डेटा ऑफ कन्जरवेशन एण्ड सस्टेनेबल यूटिलाईजेशन नामक परियोजना को अप्रैल 2015 तक विस्तार दिया गया।
   (घ) स्टेटस डिस्ट्रीब्यूशन एण्ड थ्रेट्स विद स्पेशल एम्फेसिस ऑन कंजरवेशनल मेजर्स ऑफ हाऊस स्पेरो (पासर डॉमिस्टिकस) इन अर्बन रूस्ल एरियाज ऑफ लखनऊ डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ उत्तर प्रदेश नामक परियोजना की लागत में बिना वृद्धि किये परियोजना में पुनर्विनियोग का अनुमोदन किया।
5. बड्र्स ऑफ राजभवन उत्तर प्रदेश नामक पुस्तक की 250 प्रतियों के मुद्रण का अनुमोदन दिया गया।

जैवविविधता प्रबन्धन समितियां (बी.एम.सी.)

जैवविविधता अधिनियम 2002 के मार्ग निर्देशों एवं उत्तर प्रदेश जैवविविधता नियमावली 2010 के नियम 21के प्राविधान के अनुसार इस वर्ष प्रदेश में इक्यावन (51) जैवविविधता प्रबन्ध समितियां गठित की गई हैं, जिनका विस्तृत विवरण निम्नानुसार है :–

01 अप्रैल 2014 से 31 मार्च 2015

ØE lŒ	Tkuin dk uke	fodkl [k.M dk uke	xke dk uke	xkE; lfefr dk xBu dk fnukd
1.	जलौन	टिकर	डकोर	08.11.2014
2.	गाजीपुर	बोगना	बिरनों	14 11.2014
3.	फर्रूखाबाद	अम्बरपुर	राजापुर	17.11.2014
4.	हरदोई	गंगोली	बावन	17.11.2014
5.	सीतापुर	लोहागपुर	मद्दरेहटा	18.11.2014
6.	कन्नौज	बहोसी	उमर्दा	19.11.2014
7.	मऊ	कहिनौर	परधान	20.11.2014
8.	जौनपुर	कटाहसखास	मछली शहर	23.11.2014
9.	उन्नाव	परियार	सिरोसी	24.11.2014
10.	अम्बेडकर नगर	दाउदपुर	अकबरपुर	25.11.2014
11.	लखनऊ	कोलवा	माल	25.11.2014
12.	सहारनपुर	चौरखुर्द	पूवारका	25.11.2014
13.	बांदा	करतल	नारानी	25.11.2014
14.	अलीगढ़	गुरसिकरन	धानीपुर	26.11.2014
15.	राय–बरेली	लोहवरी	राही	26.11.2014
16.	गाजियाबाद	तेलहेता	भोजपुर	27.11.2014
17.	हमीरपुर	कुछेछा	राठ	11.12.2014
18.	बादयूं	सिकन्दराबाद	उझानी	13.12.2014
19.	वाराणसी	कथिराओन	बड़ागांव	15.12.2014
20.	आजमगढ़	सेहदा	पलहनी	16.12.2014
21.	इलाहाबाद	माइलवन	फूलपुर	16.12.2014
22.	शाहजहाँपुर	मीकापुर	खुटार	20.12.2014
23.	लखीमपुर खीरी	नरहर	लखीमपुर	20.12.2014
24.	बिजनौर	बेगराजपुर	नहाटौर	02.01.2015
25.	चन्दौली	सीतापुर	चकिया	02.01.2015
26.	मुजफरनगर	सिकरेहा	जानसठ	10.01.2015

27.	गोण्डा	पुरसाब सुख सहेली	मुझेहना	10.01.2015
28.	मिर्जापुर	महूगढी	हालिया	11.01.2015
29.	बलिया	बंसतपुर	हनुमानगज	12.01.2015
30.	मैनपुरी	मारकण्डे विद्युना	धिरोर	12.01.2015
31.	अमेठी	भागनपुर	अमेठी	12.01.2015
32.	मेरठ	किशौरपुर	हस्तिनापुर	14.01.2015
33.	बागपत	दादरी	बिनौली	14.01.2015
34.	झाँसी	वानगाँव	बड़ागाँव	15.01.2015
35.	ललितपुर	बरोरा	जरवोरा	15.01.2015
36.	श्रावस्ती	राजगुरू जुस्पानिया	सिरसिया	15.01.2015
37.	भदोही	वारी	ज्ञानपुर	15.01.2015
38.	बलरामपुर	चन्दनपुर	पचपेड़वा	15.01.2015
39.	कानपुर देहात	खामहेला	झिझक	15.01.2015
40.	फतेहपुर	दफसौरा	अमौली	16.01.2015
41.	शामली	भैंसवाल	शामली	17.01.2015
42.	बरेली	मुदिया अहमद नगर	बिथरी चैनपुर	21.01.2015
43.	चित्रकूट	बराहमाफी	मानिकपुर	21.01.2015
44.	सौनभद्र	पनारी	चोपन	23.01.2015
45.	इटावा	कटेखेड़ा	जसवन्त नगर	23.01.2015
46.	गोरखपुर	पिपरी	पिपरोली	23.01.2015
47.	हाथरस	बिसाना	मुरसान	01.02.2015
48.	गौतमबुद्ध नगर	गुलिस्तानपुर	बिसरख	05.02.2015
49.	संभल	मई	बनिया खेड़ा	13.02.2015
50.	बुलन्दशहर	वलीपुर मछकोली	बुलन्दशहर	16.02.2015
51.	महराजगंज	दशरथपुर	लक्ष्मीपुर	23.03.2015

इन जैवविविधता समितियों के कार्यों में शामिल हैं :–

(क) स्थानीय समुदाय से विचार विमर्श कर जन जैवविविधता पंजिका (पी0बी0आर0) तैयार करना रख–रखाव एवं मान्यता देना।

(ख) जैविक संसाधनों व पारम्परिक ज्ञान की पहुँच का विस्तृत विवरण, एकत्र किए गए शुल्क का विवरण एवं उत्पन्न लोगों व उसके परस्पर जिम्मेदारी की विधि की सूचना देने वाली पंजिका का रख–रखाव।

(ग) अनुमोदन प्रदान करने हेतु राज्य जैवविविधता बोर्ड या प्राधिकरण द्वारा संदर्भित किसी प्रकरण पर परामर्श जैविक संसाधनों उपयोग करने वाले स्थानीय वैद्यों या व्यवसाईयों के आकड़ों का रख–रखाव।

जन जैवविविधता पंजिका (पी.बी.आर.)

जन जैवविविधता समिति का मुख्य कार्य स्थानीय समुदाय से विचार विमर्श कर जन जैवविविधता पंजिका तैयार करना है। स्थानीय जैवसंसाधनों का ज्ञान व उपलब्धता, उनका औषधीय या अन्य कोई या उनके साथ सम्बद्ध अन्य परम्परागत ज्ञान की संहत सूचना इस संहिता में अनिवार्य रूप से रखी जाएगी।

जन जैवविविधता पंजिकाएं स्थानीय जैवविविधता पारम्परिक ज्ञान व व्यवहारिक रूप में इसके प्रयोग का सहभागी अभिलेखीकरण पर केन्दित है। जैव-संसाधनों व सम्बद्ध पारम्परिक ज्ञान पर स्थानीय समुदाय के अधिकारी को सुनिश्चित करने हेतु ये मुख्य विधिक अभिलेखों के रूप मे ंदेखे जाएंगे।

इस अवधि में इस वर्ष निम्न बाईस (22) जन जैवविविधता पंजिकाए तैयार की गई।

तैयार जन जैवविविधता पंजिकाएं

ØE lE	tuin dk uke	fodkl [k.M dk uke	xke ipk;r dk uke	tu tofofo/krk iftdk dk ekU;rk fn;s tkus dk fnukd	fpfUgr itkfr;k			tu tofofo/krk iftdk vkoj.k i"V
					ikni	ikf.k	;kx	
1.	सीतापुर	खैराबाद	नयपालापुर	26.06.2014	209	33	242	
2.	गोरखपुर	चरगाँवॉ	हरसेवकपुर संख्या–2	10.11.2014	124	36	160	
3.	शाहजहाँपुर	दादरौल	मंसूरपुर	19.12.2014	98	80	178	
4.	बिजनौर	नहटौरा	बेगराजपुर	12.02.2015	137	30	167	
5.	मऊ	परदाहन	कहिनौर	24.02.2015	149	32	181	
6.	अलीगढ़	धानीपुर	गुरसिकरन	26.02.2015	196	46	242	
7.	लखनऊ	माल	कोल्वा	27.02.2015	197	82	279	

8.	चित्रकूट	मानिकपुर	बारहमाफी	03.03.2015	195	38	233	
9.	बदायूँ	उझानी	सिंकदराबाद	04.03.2015	65	46	111	
10.	मिर्जापुर	हालिया	महुगढ़ी	10.03.2015	265	45	310	
11.	मुजफरनगर	जानसठ	सिखरेड़ा	10.03.2015	78	26	104	
12.	बलिया	हनुमानगंज	बंसतपुर	16.03.2015	148	32	180	
13.	उन्नाव	सिरोसी	परियार	17.03.2015	205	34	239	
14.	गोरखपुर	पिपरौली	पिपरी	18.03.2015	127	55	182	
15.	अम्बेडकरनगर	अकबरपुर	दाउदपुर	20.03.2015	148	34	182	
16.	सीतापुर	मछरेहाट	लोहागपुर	22.03.2015	198	90	288	
17.	लखीमपुर खीरी	लखीमपुर	नरहर	23.03.2015	295	218	513	
18.	हरदोई	बावन	गंगोली	24.03.2015	197	77	274	
19.	शामली	शामली	भैंसवाल	25.03.2015	93	31	124	

20.	हमीरपुर	राठ	कुछाछा	26.03.2015	170	38	208	
21.	बागपत	बिनौली	दादरी	28.03.2015	102	26	128	
22.	बुलन्दशहर	बुलन्दशहर	वालीपुरा माछखुली	31.03.2015	189	35	224	

जैवविविधता पर प्रकृति प्रदर्शनी बस

02 अगस्त 2014 :

1. शुभारम्भ :-

इस वर्ष अभिनव सचल प्रदर्शनी 'बस प्रकृति' प्रारम्भ हुई। इसको मा० राज्य मंत्री प्रो० अभिषेक मिश्र ने प्रस्थान कराया। इस बस का विकास उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड (यू०पी०एस०बी०बी०), लखनऊ विश्वविद्यालय एवं पर्यावरण शिक्षण केन्द्र (सी0ई0ई) के साझे प्रयासों का प्रतिफल है। श्री वी० एन० गर्ग प्रमुख सचिव, वन एवं पर्यावरण उ०प्र० शासन ने अवगत कराया कि प्रथम चरण में बस 5-6 जनपदों का भ्रमण करेगी।

सी०ई०ई० एक राष्ट्रीय स्तर का संस्थान है, जिसने साइन्स एक्सप्रेस जैवविविधता विशेष कोचों का विकास किया था, उत्तर प्रदेश की जैवविविधता पारिस्थितिकीय संदर्भ एवं संरक्षण प्रयासों पर केन्द्रित चित्ताकर्षक प्रदर्शनी विकसित करने हेतु सी०ई०ई० ने यू०पी०एस०बी०बी० के साथ हाथ मिलाया। यह सचल बस संहत प्राकृतिक गैस (सी०एन०जी०) से संचालित है जो स्वच्छ ईधन सी०एन०जी० के उपयोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने मे सहायता करेगीं। बस में 18 खण्ड फलक व 4 पूरक फलक प्रदर्शनी को परस्पर विचारविमर्श योग्य बनाते है। प्रदर्शनी के साथ पारम्परिक खेल भी है।

प्रकृति बस लखनऊ के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों का भ्रमण करेगी। इस सचल प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य युवाओं को न केवल प्रदेश की जैवविविधता से परिचित कराना बल्कि उन्हे जैवविविधता संरक्षण हेतु प्रेरित करना भी है। बस में दो विज्ञान वार्ताकार भी है जो विद्यार्थियों को जैवविविधता सम्बन्धित रोचक जानकारियाँ देंगे।

बस के 6 अंक

1. भारत के (10) पारिस्थितिकीय क्षेत्र।
2. उत्तर प्रदेश की नदियां।
3. प्रदेश में वेटलैण्ड्स का पारिस्थितिकीय महत्व।
4. कृषि जैवविविधता।
5. उत्तर प्रदेश के संरक्षित क्षेत्र।
6. जैवविविधता के समक्ष संकट एवं सरक्षण

उक्त दिवस पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में 13 विद्यालयों के 250 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

iFke ijLdkj % मानसी दूबे रिवरसाईड एकेडमी लखनऊ

f}rh; ijLdkj % अमीशा नाग, टी०डी० गर्ल्स इण्टर कालेज लखनऊ

r`rh; ijLdkj % पायल केसरवानी, टी०डी० गर्ल्स इण्टर कालेज लखनऊ।

02 अगस्त 2014 को इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान लखनऊ में प्रकृति संचल बस शुभारम्भ की झलकियाँ

मंच पर आसीन मुख्य अतिथि प्रो० अभिषेक मिश्र, मा० राज्य मंत्री, व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास, श्री वी०एन० गर्ग, अध्यक्ष यू०पी०एस०बी०बी० एवं अन्य विशिष्ट जन

दीप प्रज्ज्वलन

प्रदर्शिनी का विहंगम दृश्य

श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो० अभिषेक मिश्र, मा० राज्य मंत्री व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास

पेण्टिंग प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए विभिन्न विद्यालय के विद्यार्थी

विद्यार्थियों को पुरस्कार देते हुए मुख्य अतिथि प्रो० अभिषेक मिश्र मा० राज्य मंत्री

प्रकृति बस का विद्यालय भ्रमण का माहवार विवरण

क्र.सं.	भ्रमण का दिनांक	विद्यालय का नाम	दर्शक
अगस्त 2014			
1.	04.08.2014	केन्द्रीय विद्यालय गोमती नगर, लखनऊ	835
2.	05.08.2014	भारतीय विद्याभवन पब्लिक स्कूल, लखनऊ	316
3.	06.08.2014	टी0डी0 गर्ल्स कालेज, गोमती नगर, लखनऊ	620
4.	07.08.2014	रीवर साईड एकेडमी, गोमती नगर, लखनऊ	285
5.	08.08.2014	जागरण पब्लिक स्कूल, गोमती नगर, लखनऊ	520
6.	11.08.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, उत्तर धौना	43
7.	11.08.2014	प्राथमिक विद्यालय उत्तर धौना	44
8.	11.08.2014	एल0बी0आर0एन0 उत्तरधौना	36
9.	12.08.2014	जी0जी0आई0सी0 इन्दिरा नगर	879
10.	13.08.2014	सी0बी0 गुप्ता शिक्षा एवं मानव विकास केन्द्र चन्द्रावल	407
11.	14.08.2014	प्राईमरी स्कूल कुरौनी	95
12.	14.08.2014	जूनियर हाई स्कूल	83
13.	14.08.2014	हाईस्कूल कुरौली	91
14.	16.08.2014	टेक्निकल हाई स्कूल विजय नगर	186
15.	16.08.2014	डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर हाईस्कूल वजय नगर, लखनऊ	107
16.	19.08.2014	आदर्श ग्रामीण विद्या मन्दिर हाईस्कूल नवीनी भरती	725
17.	20.08.2014	प्राईमरी स्कूल नीवा	116
18.	20.08.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय नीवा	95
19.	21.08.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय किशनपुर कौरिया	71
20.	21.08.2014	प्राथमिक विद्यालय किशनपुर कौरिया	180
21.	25.08.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय जातीखेरा	190
22.	25.08.2014	प्राथमिक विद्यालय, जातीखेरा	112
23.	26.08.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय बीबीपुर	52
24.	26.08.2014	प्राथमिक विद्यालय बीबीपुर	89
25.	27.08.2014	भगत सिंह मेमोरियल पब्लिक स्कूल, बीबीपुर	189
26.	27.08.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय बंथरा	228
27.	27.08.2014	रूप रानी मांण्टेसरी स्कूल बंथरा	157
28.	27.08.2014	लाल राम स्वरूप शिक्षा संस्थान बंथरा	1220
29.	28.08.2014	माँ श्री विन्ध्यवासिनी इण्टर कालेज विजयनगर नीमहटटा	718
30.	29.08.2014	पी0एम0बी0 राम चौराहा बंथरा लखनऊ	114
			8800
सितम्बर 2014			
31.	01.09.2014	सिटी माण्टेसरी स्कूल आनन्द नगर, लखनऊ	857
32.	02.09.2014	पी0एम0वी0 हसनपुर, खेल्वी सरोजनी नगर	177
33.	02.09.2014	प्राइमरी स्कूल हसनपुर खेल्वी सरोजनी नगर	151
34.	02.09.2014	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय हसनपुर खेल्वी	99
35.	03.09.2014	जी0जी0आई0सी0 सरोसा भरोसा	461
36.	03.09.2014	कस्तूरबा गांधी गर्ल्स स्कूल सरोसा भरोसा	108
37.	04.09.2014	जय किशन पब्लिक स्कूल औरंगाबाद	44
38.	04.09.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय औरंगाबाद, लखनऊ	62
39.	04.09.2014	प्राथमिक विद्यालय औरंगाबाद, लखनऊ	119
40.	08.09.2014	महर्षि विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, सीतापुर कॉलेज रोड़ लखनऊ	520
41.	09.09.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय हरदोईपुर	135
42.	24.09.2014	महात्मा ज्योतिबाराव फुले राजकीय स्वच्छकार विद्यालय मोहन रोड़	435
43.	26.09.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकारा, लखनऊ	94
44.	26.09.2014	प्राथमिक विद्यालय टिकारा, लखनऊ	113
45.	29.09.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय कठवारा, बीकेटी लखनऊ	146
46.	29.09.2014	प्राथमिक विद्यालय कठवाड़ा बीकेटी लखनऊ	224
47.	30.09.2014	स्वामी योगानन्द बालिका इण्टर कालेज, मोहनरोड, राजाजीपुरम लखनऊ	875
			4620
अक्टूबर 2014			
48.	01.10.2014	जवाहर नवोदय विद्यालय पिपरसंड	590
49.	09 से 10.10.2014	राज्य बालिका इण्टर कालेज बाराबंकी	1556
50.	15 से 18.10.2014	पायनियर मॉण्टेसरी इण्टर कालेज, बाराबंकी	1571
51.	17 से 18.10.2014	आर्मी पब्लिक स्कूल, लाल बहादुर शास्त्रीय मार्ग,लखनऊ कैण्ट	1531
52.	18.10.2014	आर्मी पब्लिक स्कूल सरदार पटेल मार्ग लखनऊ कैण्ट	120
53.			
54.	20.10.2014	सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज केशवनगर बाराबंकी	584
55.	21.10.2014	अरूणोदय पब्लिक स्कूल मसूदपुर ग्वारी रोड़, लखनऊ	387
56.	28.10.2014	आनन्दविहार कान्वेण्ट इण्टर कालेज लखपेड़ाबाग, बाराबंकी	379
57.	29.10.2014	राजकीय इण्टर कालेज बाराबंकी	960
58.	30.10.2014	रामसेवक यादव इण्टर कालेज बाराबंकी	1960
59.	31.10.2014	सुभाष आदर्श इण्टर कालेज करौली, बाराबंकी	888
			10526
नवम्बर 2014			
60.	03.11.2014	महर्षि विद्या मन्दिर इण्टर कालेज लखपेड़ा बाग बाराबंकी	467

क्र.सं.	भ्रमण का दिनांक	विद्यालय का नाम	दर्शक
61.	07.11.2014	मायादेवी मेमोरियल इण्टर कालेज अछली खेड़ा मोहन लालगंज लखनऊ	630
62.	10.11.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, गढ़ीचुहनौ टी, सरोजनी नगर, लखनऊ	107
63.	10.11.2014	प्राथमिक विद्यालय–1, गढ़ीचुहनौ टी, सरोजनी नगर, लखनऊ	100
64.	10.11.2014	प्राथमिक विद्यालय–2, गढ़ीचुहनौ टी, सरोजनी नगर, लखनऊ	91
65.	11.11.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय रसूलपुर सादात बी0के0टी लखनऊ	177
66.	11.11.2014	राजकीय हाईस्कूल, रसूलपुर सादात बी0के0टी लखनऊ	33
67.	12 से 13.11.2014	नेशनल चिल्ड्रन साईस कालेज, अरूनोदय पब्लिक स्कूल लखनऊ	437
68.	17.11.2014	जवावहर नवोदय विद्यालय कन्नौज	313
69.	18.11.2014	श्रीमती रमाबाई जी0जी0आई0सी0 कन्नौज	158
70.	18.11.2014	एस0के0एच0एस0 स्कूल कन्नौज जगदीशपुर छिबरामऊ कन्नौज	462
71.	18.11.2014	लोक भारती विद्या मन्दिर छिबरामऊ कन्नौज	374
72.	18.11.2014	जगदीश्वर दयाल इण्टर कालेज छिबरामऊ कन्नौज	945
73.	19.11.2014	छुमारा मिल्ली गर्ल्स इण्टर कालेज बुधवारी कन्नौज	334
74.	19.11.2014	सुशीला देवी गर्ल्स इण्टर कालेज बुधवारी कन्नौज	375
75.	19.11.2014	जे0पी0 गर्ल्स इण्टर कालेज कन्नौज	1621
76.	19.11.2014	गोमती देवी शर्मा इण्टर कालेज कन्नौज	1268
77.	20.11.2014	लाला श्याम लाल इण्टर कालेज कन्नौज	374
78.	20.11.2014	सुभाष इण्टर कालेज नेरा कन्नौज	325
79.	20.11.2014	के0के0 इण्टर कालेज कन्नौज	1508
80.	20.11.2014	मुस्लिम मोहम्मदिया इण्टर कालेज कन्नौज	1533
81.	21.11.2014	किसान इण्टर कालेज तिर्वा कन्नौज	199
82.	21.11.2014	सस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज तिर्वा कन्नौज	1170
83.	21.11.2014	डी0एन0 इण्टर कालेज तिर्वा कन्नौज	1899
84.	22.11.2014	श्री इन्दिरा देवी गर्ल्स एच0एस0 स्कूल तिर्वा कन्नौज	210
85.	22.11.2014	दीनानाथ विद्या मंन्दिर इण्टर कालेज तिर्वा कन्नौज	303
86.	22.11.2014	गौतम बुद्ध गर्ल्स इण्टर कालेज तिर्वा कन्नौज	237
87.	24.11.2014	कन्हैया लाल सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज कन्नौज	265
88.	25.11.2014	डा0 जाकिर हुसैन इण्टर कालेज गुरसहायगंज कन्नौज	3894
89.	25.11.2014	मां शीतला देवी इण्टर कालेज दिगारा जलालबाद कन्नौज	1141
90.	25.11.2014	अन्नपूर्णा पन्ना लाल बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जलालाबाद कन्नौज	123
91.	25.11.2014	बी0डी0 तिवारी इण्टर कालेज, जलालाबाद कन्नौज	1099
92.	26.11.2014	सेठ बासुदेव सहाय इण्टर कालेज कन्नौज	1269
93.	27.11.2014	कन्हैया लाल सरस्वती विद्या मंन्दिर इण्टर कालेज कन्नौज	1340
94.	28.11.2014	आर0डी0एम0 मेमोरियल पब्लिक स्कूल बंगारामऊ	225
95.	28.11.2014	आर0आर0डी0 इण्टर कालेज बंगारामऊ	1882
			27197

दिसम्बर 2014

96.	01.12.2014	आवासीय पब्लिक स्कूल रजनी खण्ड, लखनऊ	371
97.	02.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय बाशा बी0के0टी0 लखनऊ	191
98.	02.12.2014	प्राथमिक विद्यालय सरय्या बी0के0टी0 लखनऊ	62
99.	03.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय सरय्या बी0के0टी0 लखनऊ	224
100.	03.12.2014	प्राथमिक विद्यालय सरय्या बी0के0टी0 लखनऊ	213
101.	04.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय करोरा, मोहनलालगंज, लखनऊ	257
102.	04.12.2014	राजकीय बलिका हाईस्कूल करोर मोहनलालगंज लखनऊ	87
103.	04.12.2014	प्राथमिक विद्यालय करोरा मोहनलालगंज लखनऊ	179
104.	05.12.2014	प्राथमिक विद्यालय पैंकरामऊ बी0के0टी0 लखनऊ	265
105.	05.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय पैंकरामऊ बी0के0टी0 लखनऊ	103
106.	08.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय सिवलार गोसाईगंज लखनऊ	142
107.	08.12.2014	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय सिवलार गोंसाईगंज लखनऊ	114
108.	09.12.2014	शुकंतला बाजपेई सरस्वती शिशु मन्दिर, कुम्हरवा बी0के0टी0 लखनऊ	271
109.	10.12.2014	सिटी मॉण्टेसरी स्कूल अशर्फाबाद लखनऊ	486
110.	11.12.2014	प्राथमिक विद्यालय उहानी बी0के0टी0 लखनऊ	131
111.	11.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय उहानी बी0के0टी0 लखनऊ	131

क्र.सं.	भ्रमण का दिनांक	विद्यालय का नाम	दर्शक
112.	12.12.2014	कुम्हरवॉ इण्टर कालेज कुम्हरवाँ बी0के0टी0 लखनऊ	1460
113.	15.12.2014	प्राथमिक विद्यालय, हेमी कुम्हरवाँ बी0के0टी0 लखनऊ	45
114.	15.12.2014	नव ज्योति विद्यालय कुम्हरवाँ बी0के0टी0 लखनऊ	300
115.	16.12.2014	पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुम्हरवाँ बी0के0टी0 लखनऊ	78
116.	16.12.2014	प्राथमिक विद्यालय–।। कुम्हरवाँ बी0के0टी0 लखनऊ	84
117.	17.12.2014	एस0एस0 पब्लिक स्कूल कुम्हरवाँ बी0के0टी0 लखनऊ	593
118.	18.12.2014	राजकीय उद्योग आश्रम इण्टर कालेज मटियारी देवा रोड चिनहट लखनऊ	847
119.	19.12.2014	सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय निराला नगर लखनऊ	305
120.	22.12.2014	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय नदंपुर चिनहट लखनऊ	112
121.	23.12.2014	कस्तूरबा गांधी आवासी बालिक विद्यालय कुम्हखां चिनहट लखनऊ	110
122.	29.12.2014	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय मोहनलाल गंज लखनऊ	90
			7251

जनवरी 2015

123.	16.01.2015	प्राथमिक विद्यालय बीबीपुर बी0के0टी0 लखनऊ	130
124.	16.01.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय बीबीपुर बी0के0टी0 लखनऊ	130
125.	21.01.2015	गवर्नमेण्ट गर्ल्स इण्टर कॉलेज विकास नगर	909
126.	22.01.2015	सेण्ट स्टीफेंस एकेडमी तकरोही चिनहट लखनऊ	129
127.	23.01.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय नौबस्ताकला चिनहट, लखनऊ	156
128.	23.01.2015	मदर सरोज कॉन्चेण्ट स्कूल नौबस्ताकला चिनहट, लखनऊ	188
129.	27.01.2015	प्राथमिक विद्यालय गुलाम हुसैन दुखी विभूतिखण्ड, लखनऊ	197
130.	27.01.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय गुलाम हुसैन दुखी विभूतिखण्ड, लखनऊ	99
131.	28.01.2015	उन्नाव जनपद में बस प्रस्थान के अवसर पर नवाबगंज पक्षी विहार	136
132.	29.01.2015	एच0एल0एस0डी0 इण्टर कालेज	340
133.	30.01.2015	चर्च स्कूल नवाबंगज	447
			2861

फरवरी 2015

134.	02.02.2015	गवर्नमेण्ट गर्ल्स इण्टर कालेज नवाबगंज	1299
135.	09.02.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय चन्द्रावल, सरोजनी नगर लखनऊ	87
136.	09.02.2015	चन्द्रावल, सरोजनी नगर लखनऊ	70
137.	10.02.2015	राधा कृष्ण इंग्लिस मीडियम स्कूल नवाबगंज उन्नाव	630
138.	11.02.2015	सेण्ट लवैब पब्लिक स्कूल नवाबगंज उन्नाव	424
139.	11.02.2015	सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर नवाबगंज उन्नाव	213
140.	12.02.2015	श्याम लाल इण्टर कालेज नवाबगंज उन्नाव	1405
141.	12.02.2015	शिशु शिक्षा निकेतन प्राईमरी एण्ड जूनियर हाई स्कूल नवाबगंज उन्नाव	313
142.	13.02.2015	जनता माण्टेसरी विद्यालय ग्राम–आशाखेड़ा नवाबगंज उन्नाव	236
143.	16.02.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–हिम्मतगढ़ नवाबगंज उन्नाव	102
144.	16.02.2015	प्राथमिक विद्यालय ग्रम–आसाखेड़ा नवाबगंज उन्नाव	100
145.	18.02.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–हिम्मतगढ़ नवाबगंज उन्नाव	59
146.	18.02.2015	प्राथमिक विद्यालय ग्राम–हिम्मतगढ़ नवाबगंज उन्नाव	188
147.	19.02.2015	प्राथमिक विद्यालय ग्राम– नाथईखेड़ा नवाबगंज उन्नाव	60
148.	19.02.2015	मां सरस्तवी सीनियर सेकेण्डी स्कूल ग्राम पिपाहारी लखनऊ	73
149.	19.02.2015	बाबू राम दयाल पब्लिक इण्टर कालेज ग्राम–पिपाहारी लखनऊ	153
150.	20.02.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–भैसोड़ा नवाबबंज उन्नाव	87
151.	20.02.2015	जगरूप प्रसाद सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल ग्राम– भैसोड़ा नवाबबंज उन्नाव	370
152.	23.02.2015	प्राथमिक विद्यालय ग्राम–बिछपुरी–।। नवाबगंज उन्नाव	175
153.	24.02.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–भागूखेड़ा (मऊहारी) उन्नाव	147
154.	25.02.2015	प्राथमिक विद्यालय ग्राम–राय, ख्यालीमऊ नवाबगंज उन्नाव	92

क्र.सं.	भ्रमण का दिनांक	विद्यालय का नाम	दर्शक
155.	25.02.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–मऊहारी नवाबगंज उन्नाव	159
156.	26.02.2015	प्राथमिक विद्यालय ग्राम–मऊहारी नवाबगंज लखनऊ	184
157.	27.02.2015	जे0पी0 कान्वेण्ट स्कूल असाखेड़ा उन्नाव	142
			6768

मार्च 2015

क्र.सं.	भ्रमण का दिनांक	विद्यालय का नाम	दर्शक
158.	04.03.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–रजौली बी0के0टी0 लखनऊ	108
159.	04.03.2015	प्राथमिक विद्यालय रजौली बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	180
160.	09.03.2015	आई0बी0पब्लिक स्कूल रसूलपुर सादात लखनऊ	191
161.	10.03.2015	डी0बी0एस0 मॉण्टेसरी स्कूल जरहारा बी0के0टी0 लखनऊ	212
162.	11.03.2015	राज पब्लिक स्कूल रजौली लखनऊ	666
163.	18.03.2015	न्यू पैटर्न पब्लिक स्कूल मुसपिपरो बी0के0टी0 लखनऊ	375
164.	19.03.2015	प्राथमिक विद्यालय पहाड़पुर–। बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	135
165.	20.03.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय ग्राम–पहाड़पुर बी0के0टी0 लखनऊ	120
166.	20.03.2015	प्राथमिक विद्यालय पहाड़पुर–।। बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	90
167.	20.03.2015	प्राथमिक विद्यालय दरियापुर बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	123
168.	20.03.2015	कन्या क्रमोत्तर विद्यालय पहाड़पुर बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	122
169.	23.03.2015	प्राथमिक विद्यालय भारघर, बी0के0टी0	222
170.	23.03.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, ग्राम–दरियापुर बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	98
171.	24.03.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, ग्राम–दरियापुर बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	124
172.	24.03.2015	प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय, ग्राम–दरियापुर बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	235
173.	25.03.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय खंतारी बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	112
174.	25.03.2015	प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय, खंतरी बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	141
175.	26.03.2015	पूर्व माध्यमिक विद्यालय, इंदारा, बी0के0टी0 विकास खण्ड, लखनऊ	411
176.	27.03.2015	आदर्श पब्लिक स्कूल करीम नगर कुम्हरवां बी0के0टी0 मलीहाबाद	242
177.	30.03.2015	कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय मलीहाबाद	260
178.	31.03.2015	मां सरस्वती ज्ञान मन्दिर, ग्राम–पुरवा, पोस्ट मलीहाबाद	
			4211

अनुसंधान परियोजनाएं

वर्ष 2014–15 के दौरान परियोजनाओं की प्रगति निम्नानुसार हैः–

(क) पूर्ण परियोजनाएं

1. एससमेण्ट ऑफ फ्लोरल एण्ड फॉनल बायोर्डाइवर्सिटी एक्वेटिक इकोसिस्टम्स ऑफ बर्ड सेक्चुरीज (वैप्लैण्डसी) इन उत्तर प्रदेश यूजिंग हाई रेर्जाल्यूशन रिर्माट ऐन्सिंग एण्ड जी आई एस टेक्नीक्स

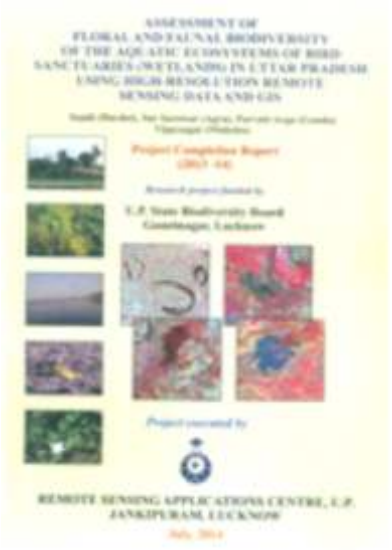

यह अध्ययन रिमोट सेन्सिंग अप्लीकेशन सेण्टर जानकीपुरम लखनऊ द्वारा करवाया गया है। वर्ष 2013–14 में क्षेत्र सर्वेक्षण तीन भिन्न ऋतुओं वर्षा शीत व ग्रीष्म ऋतु में किया गया। इस सभी ऋतुओं में वेटलैण्डस मे कई भिन्न पादप प्रजातियाँ पाई गई। तटवर्ती (शाक, तृण, वक्र) जलीय पादप (आंशिक रूप से डूबे युक्त रूप से तैरते हुए जड़दार पादप जिनकी पत्ती बह रही है। तथा काई भी अभिलिखित की गई)।

सूर सरोवर पक्षी विहार में वर्षा ऋतु में वृक्षों/शाक/तृण एवं काई प्रजातियों की 05 जलीय एवं 60 तटीय प्रजातियाँ पाई गई जबकि शीत ऋतु में 03 जलीय व 24 तटवर्ती प्रजातियॉ जिनमें कुछ कायी (एलगी) प्रजातियाँ भी पाई गई एवं ग्रीष्म ऋतु में 05 जीम व 66 तटवर्ती प्रजातियाँ देखी गई किन्तु काई (एल्गी) प्रजाति नहीं पाई गई। प्राणि प्रजाति जैवविविधता में वर्षा ऋतु में 14 स्थानीय पक्षी प्रजातियों जिनमें हजारों की संख्या में बगुला प्रजातियाँ शामिल थी, शीत ऋतु स्थानीय पक्षियों की 28 प्रजातियाँ व प्रवासी पक्षियों की 05 प्रजातियाँ देखी गई एवं ग्रीष्म ऋतु में 29 कुल की स्थानीय पक्षियों की 45 प्रजातियाँ पाई गई। पक्षी विहार में कोरबीकोनिया डी कम्बेन्स (आइजोसी) उरेरिया रूफिसेन्स (पेपिलयोनेसी) क्लेरोडेण्ड्रम विस्कोसम (वबीनेसी) जैसी असामान्य प्रजातियाँ पाई गई।

साण्डी पक्षी विहार में वर्षा ऋतु में वृक्ष/शाक/तृण की 14 जलीम एवं 50 तटवर्ती प्रजातियाँ व कुछ काई (एल्गी) प्रजातियाँ पाई गई। जबकि शीत ऋतु में 11 जलीय व 25 तटवर्ती प्रजाति एवं कुछ काई(एल्गी) प्रजातिया पाई गई एवं ग्रीष्म ऋतु में 17 जलीय व 54 तटवर्ती प्रजातिया जैवविविधता में वर्षा ऋतु में स्थानीय पक्षियों की 30 प्रजातियों जबकि शीत ऋतु स्थानीय पक्षियों की 40 एवं प्रवासी पक्षियों की 6 प्रजातियाँ देखी गई एवं ग्रीष्म ऋतु में स्थानीय पक्षियों के 26 कुलों की 35 प्रजातियाँ पाई गई। फाईसलिस मिसेमा (सोलेमेरती) कोमेलीना बेगालेन्सिस (अम्बेली फेरेसी) मारीसीलिमा मिनिएठा (मार्सीलेसी) हाइग्रोफिला शुलाई (एकेन्थसी) एनगालिस अर्वेन्सिस (प्रिमुलेसी) लाउन्सिया प्रोक्यूबेन्स (कम्पोजिटी सैकंच ओलियेरसस (कम्पोजिटी) पक्षी विहार में पाई जाने वाली असामान्य प्रजातियाँ है।

वर्षाकाल में साण्डी वेटलेण्ड जल स्रोत गर्रा नदी को दर्शाता हुआ छाया चित्र

साण्डी वेटलैण्ट सीमा के चारों ओर बबूल वृक्ष रोपण

सामान्य नाम फीजेन्ट टेल्ड जकाना
प्राणिशास्त्रीय नाम हाइड्रोफेसीनस
कुल फसियोनेडी चिरूरगस

साण्डी हरदोई की
जी0पी0 एस0 मानचित्र

पार्वती अरगा पक्षी विहार में वर्षा ऋतु में वृक्ष/शाक/तृण की 10 जलीम व 30 तटीय प्रजातियों पाई गई कुछ काई (एल्गी) प्रजातियों पाई गई। जबकि शीत ऋतु में 07 जीम व 15 तटीय प्रजातियों एवं कुछ काई (एल्गी) प्रजातियों पाई गई ग्रीष्म ऋतु में 15 जलीम व 39 तटीय प्रजातियों पाई गई किन्तु काई (एल्गी) प्रजाति नहीं पाई गई। प्राणि प्रजाति जैवविविधता में वर्षा ऋतु में स्थानीय पक्षियों की 7 प्रजातियों, शीत ऋतु में स्थानीय पक्षियो की 26 प्रजातियाँ व प्रवासी पक्षियों की 4 प्रजातियाँ देखी गई। ग्रीष्म ऋतु में स्थानीय पक्षियों की के 23 कुलों की 36 प्रजातियाँ पाई गई। एकोपारिया डुलसिसर (स्क्रोफुलोरसी) फाईला नोडीफ्लोरा (वर्मीकेसी) पक्षी विहार में पाई जाने वाली आसामान्य प्रजातियाँ हैं।

पार्वती अरगा पक्षी विहार/गोण्डा को वेटलैण्ड का दर्शाने वाली छायाचित्र

उपवर्ग एलगी वर्गः साईनोफाईटा
क्लासः साईनोफाईटा केसी प्रकृति/
प्राकृत–वास मुक्त प्रवाह

सामान्य नामः रेडक्रस्टेड पोचार्ड पोचार्ड
प्राणि शास्त्रीय नेट्टा नामः रूफीन
कुल नाम : एनाटीडै

पार्वती अरगा का
जी0पी0एस0 मानचित्र

विजयनगर पक्षी विहार में वर्षा ऋतु वृक्षों / शाक / तणु 13 जलीय प्रजातियाँ व काई (एल्गी) की कुछ प्रजातिया पाई गई। जब कि शीत ऋतु में 9 जलीय व 28 तटवर्ती एवं कुछ काई (एल्गी) प्रजातियाँ पाई गई एवं ग्रीष्म ऋतु 9 जीम व 28 तटीय प्रजाति जैवविविधता में वर्षा काल में स्थानीय पक्षियों की 12 प्रजातिया एवं प्रवासी पक्षियों की 5 प्रजातिया देखी गई एवं ग्रीष्म काल में 28 कुलों की स्थानीय पक्षियों की 39 प्रजातियॉ पाई गई। सेलोसिया अर्जेटिया (अमरनथेकेसी) स्लीयों में विस्कोसा (स्लीयोनेसी) ट्राईडेक्स प्रोक्यूम्बेन्स (कम्पोजिटे) हेलिक्टेरस आईसोरा (स्टर्कुलेसी) ट्रियनथेमा मोनोजाइना (आइजोकेसी) पक्षी विहार में पाई गई असामान्य प्रजातियॉ थीं।

विजयसागर पक्षी विहार / महोबा वेटलैण्ट का विहंगम दृश्य

सामान्य / स्थानीय नामः अजोला
वानस्पतिक नामः आजोन पिन्नाटा
कुल : अजोलाकेसी

सामान्य / स्थानीय नाम : रेड क्रेस्टेट पोचार्ड
प्राणिशास्त्र नाम : नेटटा स्फीना
कुल : एनाटीडे

विजय सागर महोबा का जी0पी0एस0 मानचित्र

2. उत्तर प्रदेश भारत की प्राणि प्रजाति विविधता की आधार भूत सूचनाओं की तैयारी

यह अध्ययन जूलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया कोलकाता द्वारा कराया गया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में पाए जाने वाली कशेरूकी व अकशेरुकी की प्रजातियों को चिन्हित करना तथा उनके विविधता, वितरण, प्रास्थितियाँ पारिस्थितिकीय तथा मनुष्य द्वारा उत्पन्न व्यवधान का उनके राज्य के मत्स्य, उभयचर कीट एवं अन्य अकेशरूकी एकत्र करने हेतु कई सर्वेक्षण कराए गया। जूलोजिकल प्रजातियों का सर्वे ऑफ इण्डिया ने नमूने एकत्र व जमा किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ की प्रदेश देश की 2.51 प्रतिशत प्राणि प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करते है। उत्तर प्रदेश का समस्त प्राणि प्रजाति आंकड़ा भिन्न–भिन्न प्रकृतवासों व पारिस्थितिकीय तन्त्रों मे पाए गए प्रोटोजोआ से मेमेलियन एवं प्राणि प्राजातियों की अधिकृत विस्तृत चेक लिस्ट तैयार करने हेतु संकलित किया गया। रिपोर्ट में राज्य में प्राणि जाति समूहों के कुलों, जीनस व प्रजातियों की संख्या भी दी गई। रिपोर्ट में उल्लेख है 130 कुलों की राज्य 821 जेनरा के अन्तर्गत 1688 प्रजातियों अकेशरूकी के 20 आर्डर बना रहे हैं एवं 151 कुलों के 420 जेनरा के अन्तर्गत 699 प्रजातियों कशेरूकी के 20 आर्डर से बना रहे है।

परियोजना का निष्कर्ष फानल इन्वेटरी ऑफ उत्तर प्रदेश नामक पुस्तक में हैं इस पुस्तक का विमोचन अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस के अवसर पर 22 मई 2014 को लखनऊ में हुआ। इस पुस्तक मे प्रोटोजोआ में मैमीलिया तक के प्राणि प्रजातियों का विस्तृत विवरण उपलब्ध है।

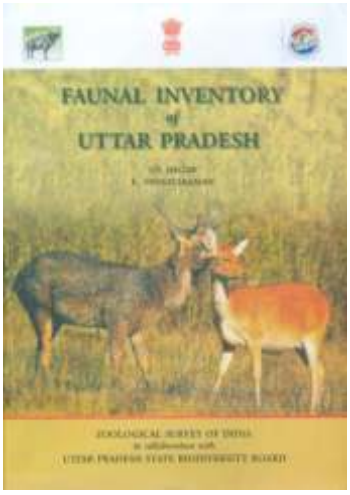

Qkb;ye@Dykl@vkMZj	iztkfr;ksa o tujk dh la[;k
अकारीः आइक्सोडिडे	5 जेनरा के अन्तर्गत 15 प्रजातियां
कोलेम्बोला (एप्टेरीगोटा)	25 जेनरा के अन्तर्गत 35 प्रजातियां
ओडोनाटा	42 जेनरा के अन्तर्गत 70 प्रजातियां
आरथोप्टेस एक्रीडोइडे	39 जेनरा के अन्तर्गत 55 प्रजातियां
हेमीप्टेराः होमोप्टेरा : फूल्गोरोइडे	13 जेनरा के अन्तर्गत 18 प्रजातियां
हेमीप्टेराः हीटोरोप्टेरा एनटाटोमोइडा	22 जेनरा के अन्तर्गत 34 प्रजातियां
हेमीप्टेराः पाइरोकोरिडे	24 जेनरा के अन्तर्गत 30 प्रजातियां
हेमीप्टेरा : लाइगोईडे	10 जेनरा के अन्तर्गत 20 प्रजातियां
हेमीप्टेरा : रेंडुविडे	12 जेनरा के अन्तर्गत 16 प्रजातियां
हेमीप्टेरा : वाटरबग्स	17 जेनरा के अन्तर्गत 23 प्रजातियां
डिप्टेरा : साइर्फिडे	22 जेनरा के अन्तर्गत 39 प्रजातियां
डिप्टेरा : कालीफोरीडे	13 जेनरा के अन्तर्गत 23 प्रजातियां
डिप्टेरा : बॉम्बीलिडे	14 जेनरा के अन्तर्गत 22 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा हिस्टेरीडे	11 जेनरा के अन्तर्गत 18 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा जाइरीनीडे	
नोटेरीडे एवं डाइटीसीडे	27 जेनरा के अन्तर्गत 62 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा : हाइड्रोफिलिडे	15 जेनरा के अन्तर्गत 24 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा : स्टाफाईलिनिडे : पेडिरिने	5 जेनरा के अन्तर्गत 24 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा : सकाराबेईडे	17 जेनरा के अन्तर्गत 35 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा : टनेब्रिओन्टीडे	28 जेनरा के अन्तर्गत 54 प्रजातियां
कोलियोप्टेरा : काराबिन्डे	72 जेनरा के अन्तर्गत 174 प्रजातियां

कोलियोप्टेरा : कॉकीनेलीडे	15 प्रजातियां
लेपीडोप्टेरा, निम्फाडिडे, स्टाईरिडे, एक्रीसिडे एवं रियोडिरेडे	19 जेनरा के अन्तर्गत 32 प्रजातियां
लेपीडेप्टोराः पाइरीडे एवं एरक्टीडी	21 जेनरा के अन्तर्गत 35 प्रजातियां
हाईमेनोप्टरा : वेस्पीडी	5 जेनरा के अन्तर्गत 15 प्रजातियां
हाईमेनोप्टरा : स्कोलीडी	4 जेनरा के अन्तर्गत 10 प्रजातियां
हाईमेनोप्टरा : कैल्शिडी	9 जेनरा के अन्तर्गत 113 प्रजातियां
मुक्त जीवी प्रोटोजोआ	11 जेनरा के अन्तर्गत 42 प्रजातियां
आथ्रोपोड्स के परजीव नीमाट्टोंस	43 जेनरा के अन्तर्गत 140 प्रजातियां
डरमाप्टेर	8 जेनरा के अन्तर्गत 13 प्रजातियां
एम्फीबिया	12 जेनरा के अन्तर्गत 24 प्रजातियां

यह प्रकाशन भविष्य में इस विषय पर कार्य करने वालों के लिए प्रदेश के समस्त प्राजतियों समूहों के अधिकारिक संदर्भ उपलब्ध कराएगा। प्रकाशन उत्तर प्रदेश की जैव विविधता के चिरन्तन (सस्टेनेबल) उपयोग एवं संरक्षण में सहायता करता है।

(ख) चालू परियोजनाएं

बोर्ड द्वारा निम्न परियोजनाओं को दो वर्ष की अवधि के लिए स्वीकृति प्रदान की गई । प्रत्येक परियोजनाओं की प्रगति का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :–

1. इंवेटराईजेशन ऑफ ऐरोमेटिक प्लांट स्पेशीज, देयर स्टेटस एण्ड एससमेण्ट आफ एरिया आण्डर कल्टीवेशन ऑफ ऐसेशियल आंयल बीयर क्राप्स इन फाईव डिस्ट्रिक्स आफ अपर गेंजेटिक्स।

यह परियोजना सी०एस०आई०आर० सेण्ट्रल इस्टीट्यूट ऑफ मेडीसनल एण्ड एरोमेटिकस प्लांट्स लखनऊ द्वारा कराया जा रहा है।

वर्ष 2013–15 के मध्य उत्तर प्रदेश 5 जनपदों लखनऊ, बाराबंकी, सुल्तानपुर, अमेठी (छत्रपति साहूजी महाराज नगर) एवं रायबरेली में सर्वेक्षण व क्षेत्र भ्रमण किया गया। परियोजना का प्रथम उद्देश्य चयनित पाँच जनपदों मे समस्त प्राकृतिक, प्राकृतिक हो चुकी, उगाई गई सुगन्धित प्रजातियों उनकी प्रास्थिति एवं प्राकृतवास का सूचीकरण करना था। वर्णित जनपदों मे आंतरिक एवं बाह्य सर्वेक्षण एकत्रीकरण में 34 कुलों के 88 जेनरा की 122 प्रजातियों चिन्हित की गई । सुगंधित पौधों का वैज्ञानिक व सामान्य नाम कुल, संक्षिप्त विवरण, फूल व फल आने की अवधि औषधीय उपयोग मुख्य रासायनिक घटकों जैविक गतिविधियों आदि का विस्तृत विवरण अभिलिखित किया गया। जिसका सन्दर्भ सामग्री के रूप में किया जा सकता है। समस्त सुगन्धित पौधों के नमूनों के प्रमाण सी0एस0आई0आर0 सी0आई0एम0ए0पी0 लखनऊ के हर्बेरियम में संरक्षित रखे गए ह। एनी सोमेलेस इण्डिका क्लोयोग विस्कोसा हाईपिस सुआवेलेन्स ने पेटा हिन्दोस्तान चि–1 ओसीमम अफ्रीकानम (चित्र–2) नये बेस्ली कम–पोगोस्टेमोन बेगांलेन्स (चित्र–3) साल्विया प्लेबिया एकत्र किया गया व संस्करण में शामिल किए गये संस्थान में जी0सी0 / जी0सी–एम0एस0के माध्यम रासायनिक विश्लेषण एवं आसवन द्वारा तेल की मात्रा का आकलन करने हेतु 30 सुगंधित पौधों के नमूने अधिक मात्रा में एकत्रित किए गये।

सर्वेक्षण व एकत्रीकरण मे ओसीमम प्रजातियों की विविधता प्रेक्षित की गई। ओसीमम की विभिन्न प्रजातियों अर्थात ओ0टेनुईलोरम (हरा व बैंगनी प्रकार) ओ0 बेसीलिकम (मिथाईल चेवीकोल एवं मिथाईल सिनामेट समूह) दो केमोटाईप्स अर्थात लिनालोल एव कपूर समृद्ध ओ0 बेसीलिकम एवं ओसीमम की एक प्रजाति में नीबू गंध/सुगन्ध अध्ययन क्षेत्र से एकत्र किए गए। ओसीमस की नामावली में संशय की स्थिति थी एवं नाम निर्धारिकों के मध्य भी/बहुधा एक ही प्रजाति को कई नामों से संदर्भित किया जाता था। कई पादप नाम निर्धारकों के साथ स्वयं ओसीमम की परिभाषा के सम्बन्ध में विवाद की स्थिति थी। नींबू सुगन्धित इस प्रजाति को पूर्व में कई भारतीय पादप नाम निर्धारकों ने ओसिमम अमेरिकान एल के रूप में त्रुटि पूर्ण चिन्हित किया । साहित्य के अध्ययन एवं खोजबीन के उपरान्त इस ओसीमम अफ्रीकानम लोर (समानार्थी) ओ0 एकजाईयो डो रम विस ओ0 पिलोरूम वार्डल्स आ0 अमेरिकानम (सेसू पुष्पांगदर्न एवं सोबती) के रूप में अधिकृत किया गया जो इस क्षेत्र के नए विवरण अभिलेख में है। नीबू सुगंधित तुलसी में मुख्य रासायनिक संगठन (72 प्रतिशत) सिट्राल (नेराल व जेराल) विटामिन ए के विश्लेषण में उपयोग होता हैं नेत्र रोग मे होता है। परियोजना का दूसरा उद्देश्य सुगंधित पादप प्रजाति की खेती–खेती के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र का आगणन एवं कृषि के सामने आने वाली बाधाएँ हैं। 5 जनपदों के 29 विकास खण्डों के 1000 ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया। प्रत्येक ग्राम में 5–25 कृषकों का चयन किया गया तथा उनसे उनकी भूमि में विभिन्न फसलों का क्षेत्रफल किस्में/बोझे हेतु उपयोग, फसल चक्र एव उत्पादों की सूचना एकत्र की गई । सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि उक्त क्षेत्रों मे कृषक अपने खेतों में मुख्यता तथा पिपरमिन्ट, पुदीना, गेंदा, पामरोजा, पवित्र तुलसी एवं वेटीवर की खेती करते है। जापानी/पिपरमिन्ट पोदीना (मेथाअर्वेसिस) की सर्वाधिक मांग वाली किस्म कोसी की खेती उक्त पॉच जनपदों में कृषको उत्पादको द्वारा की जा रही है। इसी प्रकार चयनित जनपदों मे वेटीवर (वेटीवरिया जिजामॉयडस की एस–1 सी0आई0एम0 वृद्धि पामरोज (सिम्बोयोगान मार्टिनी) की पी आर सी–1 एवं सी आई0एम0 हर्ष तुलसी (ओसीमय बेसीलिकम)सीआईएम–सौम्या एवं पिपरमिन्ट (मेथा पिपेरिटा) की सी0आई0एम0ए0पी0– पत्र उगाई जाने वाली मुख्य फसलें है। उक्त 5 जनपदों मे सुगन्धित फसलों में पिपरमिन्ट पुदीना की खेती सर्वाधिक क्षेत्र में की जाती है जिसके उपरान्त पुष्प/तेल उत्पादन गेंदा पामरोजा एवं तुलसी द्वारा होता है। सुगंधित तेलों के उत्पादन का मुख्य केन्द्र बाराबंकी हैं जिसके पश्चात लखनऊ व रायबरेली जनपदों का स्थान हैं सर्वेक्षण के दौरान ज्ञात हुआ है कि लक्षित पॉच जनपदों में मुख्य फसल व्यवस्था चावल लाही पिपरमिण्ट के उपरान्त चावल–गेहूँ पिपरमिण्ट एवं चावल आलू, पिपरमिण्ट है। मेथा पिपेरिटा की सी0आई0एम0ए0पी0 पत्र प्राकृतिक मेथोफुरान का स्त्रोत है। जो पिपरमेण्ट के डी–मेथोलाईण्ड ऑयल (डी0एम0ओ0) का मूल्य वर्धन के माध्यम से अमेरिकन पिपमिण्ट तैयार करने में होता है। इस बाराबंकी जनपद में नई सुगंधित फसल के रूप में शामिल किया गया है।

अमेठी का सलोन कस्बा, सुल्तानपुर की कादीपुर तहसील, रायबरेली का सदर तहसील लखनऊ जनपद के गोसाईगंज विकास खण्ड एवं बाराबंकी जनपद का देवा, फतेहपुर, मोहम्मदाबाद हैदरागढ़ एवं मसोली रोपण सामग्री एवं उत्तर प्रदेश के पूर्वी जनपदों विशेषकर जौनपुर, प्रतापगढ़, कौशाम्बी, इलाहाबाद, एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में सुंगधित तेल के व्यापार का उभरता हुआ क्षमतावानबाजार है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि उत्तर प्रदेश इन पॉच जनपदों में उत्पादकों को न्यूनतम समर्थन मूल्य का अभाव, खेती की उच्च लागत, सुगन्धित तेलों के बाजार मूल्य में अत्यधिक उतार चढ़ाव बाजार में कृत्रिम पिपरमेण्ट तेल का प्रवेश गुणवत्ता युक्त रोपण सामग्री की अनुपलब्धता पिपरमेण्ट की कोसी किस्म की रोपण सामग्री में अन्य किस्मों कुशल, सक्षम, संभव, हिमालया सी0आई0एम0 सरयू आदि की मिलावट दिन प्रतिदिन तेल की गुणवत्ता व तेल उत्पादन में गिरावट उन्नत किस्मों एवं उनकी खेती व प्रसंस्करण उन्नत तकनीकों के प्रति जागरूकता का अभाव जलवायु परिवर्तन एवं मांग व पूर्ति के सम्बन्ध में अपर्याप्त वाणिज्यिक सूचना जैसी मुख्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

नेपेटा हिन्दोस्तान

ओसीमम अफ्रीकनम

पोगोस्टेमोन बेंगालेनस

पिपरमिण्ट का व्यापार केन्द्र, सनोन अमेठी
(छत्रपति साहू जी महाराज नगर)

चित्र सं० 4 – सगन्धित पौधों के मुख्य उत्पादक क्षेत्र

2. उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के गौरय्या के संरक्षण के उपायों के पासर डोमिस्टिकस विशेष संन्दर्भ में प्रास्थिति विवरण एवं संकट :-

यह अध्ययन प्राणिशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा कराया गया। परियोजना ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में गौरय्या (पासर डोमिस्टकस) की प्रास्थिति वितरण व संकट जाने पर केन्द्रित है।

गौरय्या पाए जाने वाले चयनित 9 स्थालों (चित्र–1) मे विभिन्न स्थानों से ज्ञात हुआ कि गौरय्या की संख्यां में तीव्र गिरावट आ रही है। गौरय्या की संख्या में गिरावट के कई कारण रिपोर्ट में दिए गए थे। इनमें सर्वाधिक मुख्य कारण नगरीय व उपनगरीय क्षेत्रों में घोसला बनाने के स्थान की अनुपलब्धता थी पक्षी की संख्या मे वृद्धि हेतु तीन प्रकार के घोसलों अर्थात लकड़ी के बक्से, जूते के बक्से एवं मिट्टी के पात्र (चित्र–2) एवं 4 प्रकार के पूरक भोजन अर्थात काकून, बाजरा, चावल एवं इस सबका मिश्रण (चित्र–3) प्रायोगिक आधार पर स्थापित किया गए। पूरक भोजन की प्राथमिकता ज्ञात करने हेतु चारों प्राकर के पूरक भोजन उन आवासो के स्वामियों को जहॉ बक्से स्थापित किए गए एवं वितरित भी किये गए। विस्तृत सर्वेक्षण के उपरान्त कृत्रिम गौरय्या बक्से स्थापित करने हेतु अधिकतम व न्यूनतम गौरय्या संख्या वाले क्षेत्रों का चयन किया गया। लखनऊ के डालीगंज क्षेत्र में गौरय्या की संख्या अधिकतम है क्योंकि यहाँ गौरय्या घोसलों व भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। जबकि इटौजा में गौरय्या की संख्या न्यूनतम पाई गई अतः इस क्षेत्र को द्वितीय प्रायोगिक स्थल के रूप में चुना गया ।

टिप्पणी : लाल रंग परियोजना का अध्ययन क्षेत्र दर्शाता है।

चित्र–1 अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

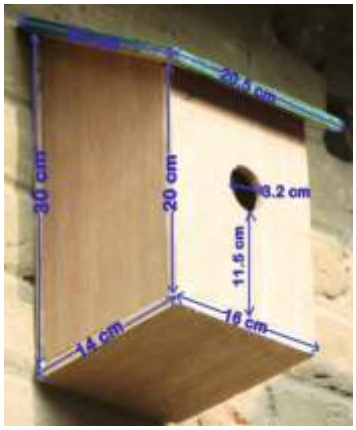

लकड़ी के बॉक्स

जूते के बक्से

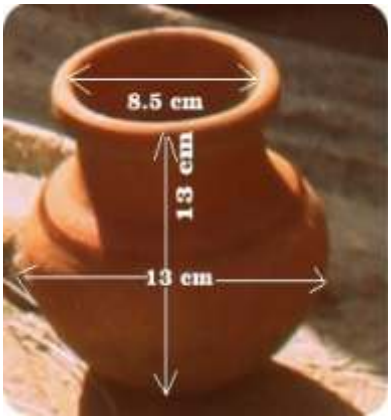

मिट्टी के पात्र

घोसलों के बक्से स्थापित करने के उपरान्त प्रजनन ऋतु (मार्च–जून) में इनका नियमित अनुश्रवण किया गया। अन्य अध्ययन क्षेत्रों का नियमित अनुश्रवण किया गया। अवलोकनों से ज्ञात हुआ कि गौरय्या द्वारा लकड़ी के बक्से को सर्वोच्च वरीयता दी गई उसके उपरान्त वरीयता क्रम में जूते के बक्से व मिट्टी के बर्तन आए। घोसलों के बक्सों का स्थायी रूप से अनुश्रवण के उपरान्त प्राप्त आकड़ों से ज्ञात हुआ कि वर्ष 2014 में डालीगंज व इटौजा में क्रमशः 30 (22 लकड़ी के वक्से, 6 जूते के बक्से एवं 2 मिट्टी के पात्र) एवं 16 (12 लकड़ी के बक्से, 3जूते के बक्से एवं 1 मिट्टी का पात्र) अंगीकृत किया गया।

अध्ययन में गौरय्या द्वारा घोसला स्थल कृत्रिम घोसला चयन के विभिन्न स्थिर राशियों (पैरामीटर) का विस्तृत विवरण शामिल किया गया। यद्यपि गौरय्या द्वारा घोसला स्थल/कृत्रिम घोसला बक्से की वरीयता व अंगीकरण के मध्य कोई सम्बन्ध में नहीं पाया गया तथा तापमान, आर्द्रता प्रकाश तीव्रता शोर, ऊचाई एवं घोसलो की दिशा जैसी स्थिर राशियों (पैरामीटर) का भी अभिलिखित किया गया।

विभिन्न संकट भी रिपोर्ट किए गए (चित्र–4)

घोसले से गिरा हुआ छोटा बच्चा

घोसले से गिरा हुआ चूजा

चूजे को मारते हुए कौआ

अण्डों व चूजो को नष्ट करती हुई बिल्ली

फाख्ता व बुलबुल के मध्य घोसलों के स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा

घोसले से गिरा हुआ छोटा बच्चा

घोसले से गिरा हुआ छोटा बच्चा

घोसले से गिरा हुआ छोटा बच्चा

चित्र–4 प्रजनन करने वाली गौरय्या (पासर डोमिस्टकस) के समक्ष खतरे

- फूस की छत में बनाए गए घोसले बिल्लियों द्वारा नष्ट किए गए।
- गौरय्या का फाख्ता, बुलबुल, रॉक चैट्स के घौसलों के स्थान हेतु प्रतिस्पर्था।
- कभी–कभी कई घरों के जीर्णोद्वार के समय मकान मालिक द्वारा भी घोसले के स्थान को अवरूद्ध कर दिया जाता है।
- घौसले का बाह्य रूप से खुले रहने की स्थिति मे गौरय्या के बच्चों पर कौए द्वारा आक्रमण किया गया।
- स्पैरो हाक द्वारा शिकार व अन्य परभक्षी पक्षियों द्वारा भी गौरय्या के बच्चों पर आक्रमण किया जाता।
- गौरय्या के बच्चों घोसले से गिरने से भी मर जाते हैं।
- पुराने आवासों का आधुनिक स्थापत्य से तीव्र गति से पुनर्निमाण में घोसलों के लिए स्थान नहीं होता।
- मनुष्यों की जीवन शैली में बदलाव भी गौरय्या (पासर डोमिस्टकस) के लिए महत्वपूर्ण संकट है।

चित्र–5 गौरय्या (पासर डोमिस्टकस) द्वारा प्राकृतिक स्थानों पर बनाए गए घोसलें।

पासर डोमिस्टकस का प्रजनन जैवशास्त्र का अध्ययन इटौजा व डालीगंज में लगातार 7 मासों (मार्च–सितम्बर–2014) तक अध्ययन किया गयां। घोसलों का निर्माण प्रत्येक व र्ा फरवरी में प्रारम्भ होता है। घरों की छत की नीचे राफ्टर में बिजली के मीटर पंखे व टयूब लाईट के होल्डर, उपयोग मे ंन आने वाले अवरूह पाईप रोलर शटर, बक्से, कृत्रिम घास वाले बॉक्स, दीवालों की दरार ब्रिक या मोर्टार में छोड़ दिए गए छेद चट्टानों में दरार व छेद (चित्र–5) जैसे भिन्न–भिन्न स्थानों में गौरय्या अपना घोसला बनाती है।

गौरय्या घोसला सामान्य तथा कमोबेश नियमित गोलाकार पिण्ड होता है किन्तु इसका आकृति व आकार में घोसले के लिए उपलब्ध स्थान की उपलब्धता के अनुसार बदलते है। घोसले का सामान्य अभिलक्षण गोलाकार या अर्धगोलाकार होता हैं जो ऊपर से गुम्बद से आच्छादित होता है एवं प्रवेश द्वारा स्पष्ट रूप से नेस्ट कप के रूप मे परिभाषित होता हैं कृत्रिम घोसले बक्स में बनाए गए घोसलों का आकार व अनुसार परिवर्तित होता है। गौरय्या बहुसंतान उत्पन्न करने वाली पक्षी है, यह एक प्रजनन मौसम में 3–4 बार 2–5 संतानों के अण्ड में प्रजनन करती है। एक सत्र में प्रजननों की संख्या व प्रत्येक प्रजनन में अण्डे में संतानों की संख्या अभिलिखित की गई। कृत्रिम घोसलों की सफलता की विश्लेषण करने के लिए स्थापित किया गया प्रत्येक घोसले (अर्थात समस्त 3 प्रकार के बक्से, लकड़ी के बक्से , जूते के डब्बे एवं मट्टी के बर्तन) जिन्हे गौरय्या ने अपनाया ग्लोबल पोजीशनिग का कोआर्डिनेटस अभिलिखित किया गया। परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि गौरय्या द्वारा लकड़ी के बक्से सबसे अधिक अपनाए गए जिस के बाद जूते के बक्से उपनाए गए तथा मिट्टी के बर्तन के घोसले सबसे कम अपनाए गए। यह पाया गया कि एक प्रजनन मौसम में गौरय्या ने सर्वाधिक चार बार प्रजनन किया तथा संतानों की संख्या 2–5 थी।

घोसलों बनाने में प्रयुक्त सामग्री का अध्ययन करने हेतु प्रजनन सत्र समाप्त होने के उपरान्त खाली घोसले एकत्र किया गया। प्राकृतिक व कृत्रिक घोसलो में प्रयुक्त सामग्री का अध्ययन करने के लिए घोसले प्राकृतिक स्थलो ंसे एवं लकड़ी के घोसलो से भी एकत्र किया गए। घोसलें बनाने की विभिन्न सामग्री घोसले में उपलब्ध स्थान के आधे से अधिक में मरे गए थे।

घोसला निर्माण में उपयोग की गई प्राकृतिक सामाग्री मे आस–पास चारों और पाई जाने वाली सामग्री थी। ये सामग्री धान (ओरीजा सटाइवा) दूब घास (साइनोडोन डक्टीलोन) छोटे झाड़ीदार पौधो की छाल, खजूर की पत्ती (ताड़ का झाड़ू) फोएनिकस डकटीलीफेस, मूंज पत्ती सैकरम मुजा, धनिया पत्ती कोरिएण्डर पत्ती एवं विभिन्न पक्षियों विशे ा कर मुर्गे के पंख आदि थी। प्राकृतिक घोसले में प्राकृतिक व मानव निर्मित कुल 20 प्रकार की सामग्री पाई गई। लकड़ी के बक्से मे बनाए गऐ घोसला सामग्री पाई गई। प्रायोगिता अध्ययन की सफलता के

चित्र–6 रीजनल साईस सिटी अलीगंज में पेण्टिंग प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते विद्यार्थी।

उपरान्त समस्त तीनों प्रकार के घोसले बक्से (लकड़ी, जूते के डब्बे व मिट्टी के पात्र) के 20 जोडे अधिकतम जनवरी 2015 में गौरय्या संख्या वाले क्षेत्र डालीगंज एवं न्यूनतम गौरय्या संख्या वाले क्षेत्र इटोजा में रखे गए। वर्ष 2014 में कृत्रिम घोसले बक्से स्थापित किए जाने से गौरय्या इनसे पूर्व परिचित थी। अतः वर्ष 2015 में गौरय्या ने इन कृत्रिम घोसलों का अधिक सरलता से स्वीकार कर लिया तथा वर्ष 2014–14 में 50 जोडे कृत्रिम घोसला बक्सों (30 जोडे पुराने बक्से+20 जोडे नए स्थापित बक्से) का नियमित रूप से अनुश्रवण किया गया। प्रेक्षत्रों से ज्ञात हुआ कि गौरय्या द्वारा डालीगंज में 84 घोसले बक्से (लकड़ी के 47+जूते के बक्से 27+मिट्टी के पात्र 2) अपनाए गये।

परियोजना संचालन का एक उद्देश्य लोकप्रिय वार्ताओं, दृश्य श्रव्य कार्यक्रम एवं सामूहिक विचारविमर्ष के माध्यम से विद्याथियों वन कर्मियों एवं स्थानी गैर सरकारी संगठनों के नेताओं तक सक्रिय पहुँच बनाना है। स्थानीय समुदायों से उत्तर दायित्व की भावना उत्पन्न कर एवं नियमित अनुवष्ट द्वारा संरक्षण अनुश्रवण संजाल स्थापित किया गया। संरक्षण अनुश्रवण संजाल स्थापित करने के उपरान्त स्थानीय जनता गौरय्या संरक्षण के प्रति और अधिक जागरूक तथा बहुत अधिक उत्साहित हुई। 14 मार्च 2015 को डालीगंज व इटौजा में दो कार्यशालाए आयोजित की गई तथा 20 मार्च 2015 की रीजनल साईस सिटी अलीगंज लखनऊ में विश्व गौरय्या दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इसी क्रम में 20 मार्च 2015 को विश्व गौरय्या दिवस स्वयं सेवकों की सहायता से जागरूकता एवं गौरय्या गणना अभियान संचालित किया गया। गणना में गौरय्या की कुल संख्या 5637 पाई गई। गौरय्या गणना के उपरान्त रीजनल साईस सिटी अलीगंज लखनऊ में विभिन्न प्रतियोगिताए आयोजित की गईं। 13 से अधिक विद्यालयों के कक्षा 6–12 के 400 से अधिक विद्यार्थियों ने गौरय्या संरक्षण विषय पर पेन्टिंग प्रतियोगिता गौरय्या योजना भोजन आवास व उड़ान विषय पर रंगोली प्रतियोगिता एवं गौरय्या विषय क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से (चित्र–6 व 7) अपने विचार व्यक्ति किए। श्रीमती प्रतिभा सिंह भा0व0से0, सचिव, उ0प्र0 राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ, उमेश कुमार, परियोजना समन्वयक, रीजनल साइन्स सिटी अलींगज, लखनऊ एवं प्रो0 मधु त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, जन्तु विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ ने पुरस्कार व प्रमाण पत्र देकर विजेताओं का उत्साह वर्धन किया। किसी भी प्रजाति के संरक्षण के लिए स्थानीय जनता का

चित्र–7 रीजनल साइंस साई सिटी अलीगंज लखनऊ में क्विज प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए विद्यार्थी।

जुड़ाव व समर्थन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डालीगंज व इटौजा की जनता गौरय्या सरंक्षण हेतु बहुत उत्सुक है तथा उनके आवास गौरय्या के घोसलों से भरे है। अन्य व्यक्तियों को भी गौरय्या संरक्षण के लिए प्रेरित करने हेतु गौरय्या संरक्षण, रूचि लेने वाले व्यक्तियों का चयन कर उन्हें प्रशंसा पत्र व पुरस्कार के रूप में गौरय्या की आकृति के कप देकर प्रोत्साहित किया गया।

3. उ0प्र0 में चिरोप्टरान विविधता एवं संरक्षण

यह अध्ययन बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा कराया गया। चिरोप्टरान प्राणि प्रजाति की विविधता एवं उनका आवास चयन व आवास पारिस्थितकी का आकलन करने के लिए यह अध्ययन प्रदेश के कुछ जनपदों लखनऊ (रेजीडेन्सी, भिराखनपुरा, पिपरसिण्डी, काकोरी एवं मोहनलाल गंज), बाराबंकी (दरियाबाद एवं बंकी, अम्बेडकर नगर (मोहानपुर, नसुल्लापुर, लोधीपुर एवं पिपरी), आजमगढ़, मऊ, आगरा, फिरोजाबाद, चित्रकूट, बांदा, कानपुर एवं उन्नाव में कराया गया, इसके साथ ही अध्ययन के क्षेत्र में चमगादड़ संरक्षण के लिए स्थानीय निवासियों को शिक्षित करने हेतु जागरूकता शिविर संचालित किये गये।

अमन मण्डल में जैव द्रव्यमान व स्तनपाई प्रजातियों की समृद्धि में चमगादड़ सार्थक योगदान देते हैं। सम्पूर्ण विश्व में चमगादड़ की 1232 प्रजातियॉ ज्ञात हैं तथा भारतीय उप महाद्वीप में चमगादड़ की 117 प्रजातियाँ पायी जाती हैं। टेरोपोडिट चमगादड़ पारिस्थितकीय व आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कई पादप प्रजातियों के बीजों का विसरण व परागण करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। रात्रिचर हानिकारक कीटों का भक्षण कर कीटों के जैविक नियंत्रण में बड़ी भूमिका का निर्वहन करते हैं। माइक्रोचिरोप्टरान चमगादड़ कृषि पारिस्थितकीय तंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

राइनोपोमा हार्डविक्की

पिस्ट्रेलस कोरामाण्ड्रा

राइनोपोमा माइक्रोफाइलम

टेरोकार्पस जिग्नेटस

साइनोप्टेरस स्फिन्क्स

मेगाडर्मा लाईरा

स्कोटोफिलस हीथाई

राऊसेटस लेश्नाउलिटी

हिप्पोसाईडेरोस फुल्लवस

टाफोजोयस नूडीवेण्ट्रिस

वर्तमान अध्ययन वर्ष 2013–15 के मध्य उ0प्र0 के कई जनपदों यथा लखनऊ, बाराबंकी, अम्बेडकर नगर, आजमगढ़, मऊ, फैजाबाद, बस्ती, सुल्तानपुर, इलाहाबाद, बहराईच, हरदोई, जौनपुर, गोरखपुर, बांदा, कानपुर, उन्नाव, गोण्डा, बलरामपुर, महोबा, देवरिया, बिजनौर, मेरठ व बागपत में किया गया। अध्ययन काल में टेरोपोडिड चमगादड़ की तीन प्रजातियाँ यथा–इण्डियन फ्लाइंग फाक्स, टेरोपस, जिगनेटस, लेशनाउल्ट्स राउसेट, रासेट्स लेशनाउल्टी तथा लघुनाक फल खाने वाले चमगादड़, साइनोएटेरस स्फिंक्स (टेरीपोडिडे) देखी गयी। इसके अतिरिक्त उ0प्र0 में विभिन्न स्थानों में कीटभक्षी चमगादड़ों की 8 प्रजातियाँ यथा इण्डियन फाक्स वैम्पायर बैट्स, मैगाडर्मा लाइरा (मैगाडर्माटिडे), द फल्बुस राउण्ड लीफबैट, हिप्पोसिडेरोस, फुल्वुस (हिप्पोसिडेराइडे), द नेकेड रमण्ड, टॉम्ब बैट, टोफोजाएस, नूडीवेंट्रिस (एम्बालोनुरीडे), द लेसर माउस टेल्ड बैट, राइनोपोमा हार्ड विक्यिौर (राइनोपोमेटीडे), द ग्रेटर माउस टिल्ड बैट, राइनोपोमा माइक्रोफिलम (राइनोपोमेरिडे), केलार्टस पिपिस्ट्रेले, पिपिस्ट्रेलस, कोरोमाण्ड्रा (वेस्परटिलियोडे) केलार्ट्स पिपिस्ट्रेले, पिपिस्ट्रेलस सिलोनिकस (वेस्परटिलियोनिडे) एवं एशियाटिक ग्रेटर येलो हाउस बैट, स्कोटोफिलस हीथीआई(वेस्परटिलियोनिडे) प्रेक्षित की गयी। इसके साथ ही प्रजाति पहचान हेतु समस्त चमगादड़ प्रजातियों की आकारिकी नपत अभिलिखित की गयी। चमगादड़ द्वारा आवास चयन व आवास निर्माण व्यवहार का भी अवलोकन किया गया। फ्रूजीवोरस चमगादड़ यथा पी0जिग्नेटस एवं सी0 स्फिक्स वृक्षों की जड़ों में आवास बनाने की प्राथमिकता देते हैं, जबकि कीट भक्षियों की कई प्रजातियाँ गुफाओं, दरारों, परित्यक्तता भवनों स्मारकों व मन्दिरों में आवास बनाते हैं। चमगादड़ अपना आवास बनाने हेतु मिलियेसी, मोरेसी, एपोसिरेसी, एनोनिकेसी, अरेकेसी, मिर्टिएसी, एनाकार्डियाकेसी, फेबिसी, मोरेसी, पोएसी, सपोटेसी, उल्मेसी एवं रूटेसी कुल के वृक्षों को प्राथमिकता देते हैं।

कीटभक्षी चमगादड़ों के वृक्षों में आवास बनाने की अपेक्षा दरारों, पुराने भवनों, स्मारकों का आवास स्थायी पर्यावरण प्रदान करते तथा अन्य परभक्षियों से इनकी रक्षा करने के साथ ही प्राकृतिक आपदाओं से भी बचाव करते हैं। यह आवास आर्द्रता व तापमान जैसे आन्तरिक पर्यावरण को भी बनाये रखते हैं।

फलभक्षी चमगादड़ की समस्त तीन प्रजातियों व कीटभक्षी चमगादड़ की कुछ प्रजातियॉ अपेक्षाकृत बड़े वृक्षों में अपना आवास बनाते हैं। अतः ऐसे वृक्षों को काटने से अनिवार्य रूप से रोकना चाहिये। कीटभक्षी चमगादड़ों की कई प्रजातियॉ एतिहासिक स्मारकों को प्राथमिकता देती हैं। अतः इन एतिहासिकों आवासों को बिना गिराये और जीर्णोद्धार किये संरक्षित रखना चाहिये। चमगादड़, परागण, बीजों का विसरण सक्रामक बीमारियों के नियंत्रक एवं पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखकर पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अतः चिरोप्टरान प्राणि प्रजाति को समुचित संरक्षण कार्यक्रम के माध्यम से अनिवार्य रूप से संरक्षित करना चाहिये। चमगादड़ की जैवविविधता एवं इसका संरक्षण विद्यार्थियों की पाठ्य गतिविधियों में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिये।

उत्तर प्रदेश के चिरोप्टरान प्राणि की विविधता व वितरण का वर्तमान अध्ययन उ0प्र0 की चमगादड़ विविधता की सूचना उपलब्ध करवाता है। अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्रदेश में चमगादड़ के जीवित रहने के लिए आवश्यक विभिन्न आवास, स्थल व भोजन प्राकृतवास की दृष्टि से समृद्ध है। वर्तमान अध्ययन का परिणाम उ0प्र0 की चमगादड़ जैवविविधता पर अतिरिक्त अभिलेख उपलब्ध कराता है।

4. रामगढ़ व बखीरा झील में मत्स्य विविधताः संरक्षण व चिरन्तर (सस्टेनेबल) उत्पादन के पुराने व नवीन आकड़ों के साथ वर्तमान प्रास्थितिकी तुलना-

यह अध्ययन नेशनल व्यूरो आफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज (आई0सी0ए0आर0) लखनऊ द्वारा किया गया है। यह अध्ययन रामगढ़ व बखीरा झील के परिवर्तित हो रहे परिदृश्य में सामाजिक आर्थिक व सामाजिक प्रास्थित मत्स्य जैवविविधता उनके दोहन का स्तर समझने में सहायता करेगा।

मार्च 2013, फरवरी 2015 के मध्य रामगढ़ झील का नियमित मासिक सर्वेक्षण किया गया। दोनों झीलों की मत्स्य विविधता सुनिश्चित करने हेतु गोरखपुर व संतकबीर नगर के स्थानीय बाजारों एवं स्थलीय केन्द्रों का सर्वेक्षण किया गया। मछलियों को मानक वर्गीकरण के अनुसार चिन्हित किया गया। नये प्रेक्षण निम्नानुसार अभिलिखत किये गयेः–

1. कोलिसा फेसिमाटा व टेटीरोन्यूस्टस फॉसिल्स का हाईपोथैलामस एवं पिटीट्यूरीक लैण्ड, टेलियोस्ट्स के दिमाग में स्थानीयकरण हो गया है।
2. वाणिज्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मछलियों के अण्डाशय अगस्त माह में पूर्ण परिपक्व हैं तथा सितम्बर के उत्तरार्ध व आगामी मासों में कमी आने की गतिविधियाँ शुरू हो जाती हैं।
3. मत्स्य विविधता की वर्तमान परिस्थिति दोनों झीलों में मत्स्य पकड़ने के कार्य में परिवर्तन हेतु उत्पादक कारकों के लिए उत्तरदायी है।

रामगढ़ झील में मत्स्य जैवविविधता

रामगढ़ झील से पकड़ी गयी विभिन्न प्रकार की मछलियों का एकत्रीकरण

रामगढ़ झील से पकड़ी गयी बिग हेड एवं परदेश से लाई गयी मछलियॉ

रामगढ़ झील से पकड़ी गयी विभिन्न प्रकार की मछलियों का एकत्रीकरण

रामगढ़ झील से पकड़ी गयी वालागो अट्टू (8.0 किग्रा0)

रामगढ़ झील की मत्स्य जैवविविधता पर सेमिनारः

दिनांक 15.06.2014 को मेहरबा की बारी कूड़ाघाट (रामगढ़ झील के पास) गोरखपुर में रामगढ़ झील की जैवविविधता एवं संरक्षण विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया । इस सेमिनार का उद्देश्य मत्स्य पालन व इस गतिविधियों में लगे हुए लोगों के लाभ हेतु मछुवारा समुदाय के मत्स्य पालन आधारित तकनीकों का हाल में विकास एवं राज्य मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश के कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त करना था। सेमिनार में रामगढ़ झील की मत्स्य जैवविविधता का आकलन एवं चिरन्तर (सस्टेनेबल) उपयोग हेतु मत्स्य संसाधनों के संरक्षण के लिए रणनीति विकसित करने पर बल दिया गया।

बखीरा झील की मत्स्य जैवविविधता पर सेमिनारः

बखीरा झील की मत्स्य जैव विविधता पर सेमिनार दिनांक 29.04.2015 को प्रभागीय रेंज कार्यालय, बखीरा पक्षी बिहार में जसवाल बखीरा झील की मत्स्य जैवविविधता एवं संरक्षण विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी। सेमिनार का शुभारम्भ डॉ0 जे0पी0 शुक्ला, विभागाध्यक्ष, प्राणि शास्त्र विभाग, एस0एच0 किसान पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, बस्ती ने किया। जबकि श्री राज कपूर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य एवं श्री राम प्रकाश मिश्र उप प्रधानाचार्य, बेनीमाधव गोपीनाथ इण्टरमीडिएट कालेज, बखीरा विशिष्ठ अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने हमारी सन्तति के सुखद भविष्य हेतु बखीरा झील का महत्व एवं मत्स्य जैवविविधता व सम्पूर्ण वन्य जीवों के संरक्षण पर बल दिया। श्री आर0के0 त्रिपाठी ने झील के पारिस्थितिकीय महत्व एवं जैवविविधता पर एक परिदृश्य प्रस्तुत किया। डॉ0 अनु शुक्ला ने बस्ती जनपद के छोटे जलपिण्डों की मत्स्य विविधता तथा मत्स्य प्राणि प्रजाति के संरक्षण हेतु किये जाने हेतु अनुभवों को साझा किया। सानीछारा एवं जसवाल से आये वरिष्ठ मत्स्य पालकों ने बखीरा झील के मत्स्य व मत्स्य पालन पर अपने विचार व्यक्त किये एवं मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण हेतु अपनाये जाने वाले कुछ उपायों हेतु सुझाव दिये। झाल के सरीसृपों व पक्षियों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

5. एसेसमेण्ट ऑफ सेज बेस्ड ऑनः माइक्रो मारफॉलॉजिकल करेक्टर्स फूड वेल्यू एवं पोटेंशियल रोल इन फाईटो रेमीडिएशन इन वेटलैण्ड्स ऑफ उत्तर प्रदेशः

यह अध्ययन वनस्पति शास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा किया गया।

परियोजना की शोध योजना के अनुरूप नरकुल का एकत्रीकरण उत्तर प्रदेश के विभिन्न वेटलैण्ड्स से किया गया। पौधों का एकत्रीकरण इलाहाबाद समीपवर्ती क्षेत्रों (शंकरगढ़ व फूलपुर), अल्वारा ताल (कौशाम्बी), चन्द्रप्रभा (चन्दौली), समसपुर पक्षी विहार (सलोन वेटलैण्ड), रायबरेली, नवाबगंज पक्षी विहार (उन्नाव जनपद), सुरहाताल (बलिया जनपद), पार्वती अरगा पक्षी विहार (गोण्डा), कन्नौज जनपद में लाख बहोसी (लगभग 4 कि. मी. दूर) के समीप दो झीलों (उथली झील) में फैले लाख बहोसी पक्षी विहार, जनपद मैनपुरी में समान पक्षी विहार, एटा जनपद के जलेसर उप खण्ड में पटना पक्षी विहार एवं हरदोई में साण्डी पक्षी विहार से किया गया। अध्ययन में गोरखपुर व बलरामपुर जनपद भी शामिल थे। दो वर्षो की अवधि में 17 जीनस की कुल 82 प्रजातियां एकत्रित की गईं। साईप्रस लैन्सियोलोट्स का पाया जाना भारत में नया रिकार्ड होगा तथा इसके निष्कर्ष सचरित किए जा चुके हैं। भारत में बोल्बोसकोनेस ग्लाउकस की उपस्थिति सुनिश्चित हो चुकी है। सूक्ष्म आकारिकी मानकों (एस ई एम एवं फाईटोथि) द्वारा बोल्बोसकोनेस काम्प्लेक्स एवं स्कोएनोप्लिक्टस कॉम्प्लेक्स का विश्लेषण किया गया। बोल्बोसकोनेस कॉम्प्लेक्स सम्बन्धी निष्कर्ष जर्नल प्लाण्ट सिस्टमेटिक एण्ड इवोल्यूशन में प्रकाशित हो चुके हैं। सकोएनोप्लिक्ट्स कॉम्प्लेक्स के निष्कर्ष सम्बन्धी एक शोध पत्र जर्नल एक्वेटिक बॉटनी (एल्सीवियर) को प्रेषित किए गए हैं, परीक्षाणाधीन है।

अधिकांश वेटलैण्ड नरकुल जल विसरित फल की फसलें उत्पादित करते हैं। इन्हें वीटो, पक्षियों, चटक गौरय्या एवं कुछ स्तनपाईयों की विभिन्न प्रजातियां खाती हैं। नरकुल के बीज व पत्तियां ताजा जल के मीडोज बनाते हैं। ट्यूबर, खनिजों के महत्वपूर्ण पोषक स्रोत है तथा क्रेन जैसे पक्षियों के लिए अवशेष तत्व हैं। इलियोकेरिस डुलसिस एल (वाटर चेस्टनेट) एवं साईप्रेस एस्क्यूलेण्टस एल (कशेरू) के ट्यूबरों का एल आई बी एस एवं आई सी पी एम एस एवं अन्य तकनीकों से ट्यूबर में कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन सामग्री एवं खनिज तत्व ज्ञात करने हेतु

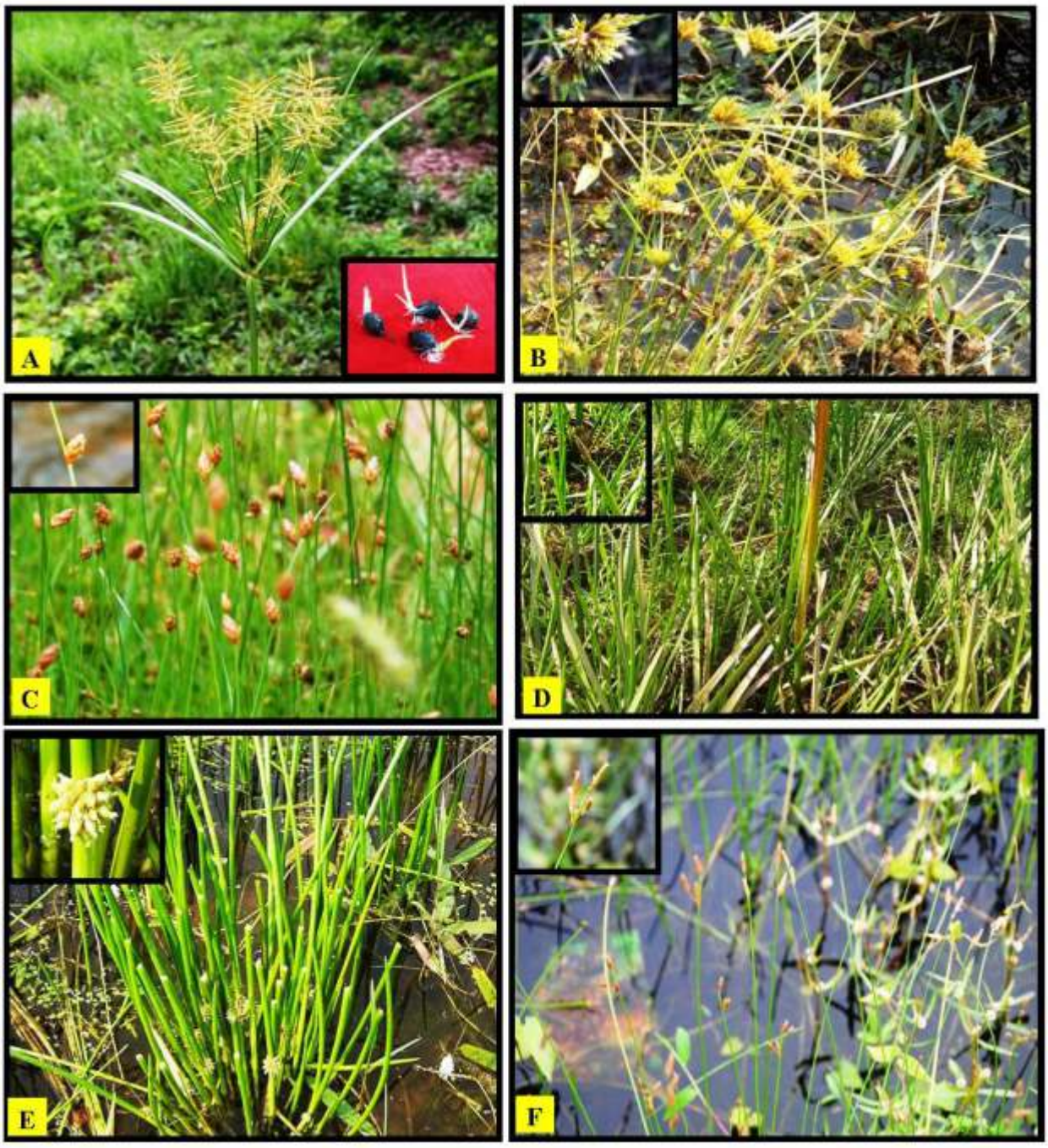

चित्र 1(अ) साइप्रस एस्कुलेन्टस; (ब) पाइक्रेस पॉलीस्टकइस (रोटब) पी. बीयूव; (स) फिमाब्रिस्टाईलिस शियोनाइड्स;
(द) एलियोकेरिस एक्यूटांगुला (राक्सब) शुल्ट; (च) शोइनोप्लेटस आर्टी कुलेटस (एल) पल्ला;
(छ) फिम्ब्रिस्टाईलिस फेरूजीनिया (एल) वहल

ट्यूबर का विश्लेषण किया गया। एकत्रीकरण के दौरान सूचना एकत्र करने के लिए स्थानीय व्यक्तियों से विचार विमर्श किया गया। दोनों स्रोतों को सम्मिलित करते हुए नरकुल की खाद्य मूल्य के सम्बन्ध में एक सूची तैयार की गई ।

साइपरेसी का कुल साइपरेसी एस्कुलेन्टस एल. सामान्य तौर पर कशेरू के नाम से जाना जाता है। यह सम्पूर्ण विश्व में जंगली व कृषि फसल के रूप में उगता है। मनुष्यों के अतिरिक्त क्रेन जैसे बड़े पक्षियों एवं अन्य पशुओं का भी भोजन है। वेटलैण्ड्स एवं समीपवर्ती क्षेत्रों में बढ़ते क्रास पॉलीनेशन, कशेरू में पर फाईटो एक्यूमुलेशन प्रापर्टीज एवं उसके प्रभाव का अध्ययन न केवल मनुष्यों के लिए एवं वन्यजीवों के संरक्षण के लिए भी आवश्यक है। साइप्रस एस्कुलेन्टस पौध में आर्सेनिक व क्रोमियम के जैविक संचयन के कारण आकारिकी एवं संरचनात्मक परिवर्तनों की खोज हेतु साइप्रस एस्कुलेन्ट्स पौधों का तीन सप्ताह तक आर्सेनिक व क्रोमियम का धातु उपचार किया गया। धातु संचयन के कुल अध्ययन से ज्ञात हुआ कि उच्च सहिष्णुता एवं संचयन सीमा के कारण साइप्रस एस्कुलेन्ट्स में इस पौध में क्रोमियम है। वेटलैण्ड प्राणि प्रजातियों के लिए यह संवदेनशील खाद्य स्रोत है, इस पौधे में पाए जाने वाली भारी धातु व अन्य प्रदूषकों का खाद्य श्रृखंला में प्रभाव जानने हेतु यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इस परियोजना का निष्कर्ष उत्तर प्रदेश में दलहन विविधता के सम्बन्ध में दलहन की जटिल नामकरण प्रणाली, उनकी खाद्य मूल्य एवं फाईटोएक्सईशन क्षमता पर महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाता है। यह निष्कर्ष भविष्य में टेक्सोनोमिक कार्यकर्ताओं वेटलैण्ड पारिस्थितिकीय पर कार्य करने वाले व्यक्तियों, वेटलैण्ड संरक्षण, वेटलैण्ड पुनर्स्थापना पक्षियों के संरक्षण एवं दलहन पौधों के महत्व पर सामान्य जन में जागरूकता उत्पन्न करने में उपयोगी सिद्ध होगें।

6. उत्तर प्रदेश में दुधवा राष्ट्रीय उद्यान एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में टेरीडोफाईट्स एवं हेपाटिसेई (ब्रायोफाइट्स) की विविधता वितरण एवं परम्परागत वनस्पति शास्त्र (एथनोबॉटनी)

यह परियोजना राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा संचालित की गई उ0प्र0 के दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, किशनपुर वन्यजीव विहार, कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार एवं सीमावर्ती तराई क्षेत्रों से टेरीडोफाईट्स पर बेसलाईन ऑकडे लिए गए। इस परियोजना के मुख्य उपलब्धियां निम्नानुसार हैंः

टेरीडोफाईटस एवं ब्रायोफाइट्स (टेपाटिसेई) के अद्यावधिक बेसलाईन ऑकड़े लखीमपुर खीरी दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में एवं किशनपुर वन्यजीव विहार, बहराईच में कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार एवं उत्तर प्रदेश की तराई के सीमावर्ती क्षेत्रों से तैयार किए गए। बेसलाईन ऑकडों ने टेरीडोफाइट्स की 10 प्रजातियां व ब्राइयोफाइट्स (प्रजाति के सही नाम के बिना) 5 टेक्सा पाए जाने की सूचना उपलब्धक कराई। मानसून पूर्व व मानसून पश्चात् (मार्च 2013 से फरवरी 2015) दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, किशनपुर वन्यजीव विहार, कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार एवं इसके सीमावर्ती तराई क्षेत्रों के वन क्षेत्रों में टेरीडोफाईट्स एवं ब्राइयोफाइट्स से सर्वेक्षण एवं एकत्रीकरण हेतु तीन परवर्ती, सुविस्तृत एवं क्षेत्र अन्वेषण किए गए।

लखीमपुर खीरी के दुधवा राष्ट्रीय उद्यान के 12 इलाकों (बेलराया, किला, दुधवा, सोनारीपुर, ककरहा ताल, सलूकापुर, बेलापरसुआ, सठियाना, बेलघाट, गौरीफंटा, चंदन चौकी, बनकटी) किशनपुर वन्यजीव विहार के 4 इलाकों (कटइय्या चौकी, किशनपुर, झादी ताल, तार कोठी) एवं कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार के 12 इलाकों

(सदर बीट, बिछिया बीट, निशना-गाढ़ा, छफरिया चौक, रामपुरवा, तिगड़ा वन, मुर्थिया ककरहा, मोतीपुर, हसुलिया बीट, बडखड़िया बीट, अब्दुल्लागंज वन) से टेरीडोफाईट्स के कुल 518 व ब्राइयोफाईट्स के 197 नमूने एकत्र किए गए।

टेरीडोफाईट्स के 518 व ब्राइयो-फाईट्स के 197 नमूनों का हर्बेरियम बनाया गया व हर्बेरियम (एल डब्लू जी) में जमा किये गये।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में बेला परसुआ में वन का दृश्य

अध्ययन क्षेत्र में टेरीडोफाईट्स के 518 नमूनों की पहचान में 16 जेनरा एवं 14 कुल की 26 प्रजातियां एडियान्टम कैपीलस वेनरीजलिन, ए. एजवर्दी हुक, ए. इनसीजम फासर्क, ए. फिलीप्पेन्स बर्म. एफ, एम्पेलोप्टेरिस प्रोलीफेरा (रेट्ज), कोपेल, अजोला पिन्नाटा आर.बी.आर., सेराटोप्टेरिस थालीक्ट्रोइड्स (एल) ब्रोगेन, केइलान्थस बाइकोलर (राक्बर्गाई) ग्रिफ सी एल्बोमार्जिनाटा, क्रिस्टेला एपेन्डिकुलाटा (पी आर) होल्ट, क्रिस्टेला अरीडा (डी डॉन) हॉल्ट, क्रिस्टेला डेनटाटा (फोर्स्क), ब्राऊनसे एण्ड जर्मी, सी पैरासाईटिका (एल) लेवी, डिप्लाजियम एस्कुलेन्टस (रेट्ज) एस डब्लू, ड्रायोप्टेरस कोकेलिएटा (हाम एक्स डी डॉन), सी सी एच आर, इक्वीसेटम रेमोसिसीमम डेस्फ, ई. डिफ्यूसम फलेक्सुओसम (एल) एस डब्लू, एल, जापानिकम (थम्ब), एस डब्लू, मार्सीलिया मिनुटा एल माइक्रोलेपिया स्पेलुन्सेई (एल) मूरे, ओफियोग्लोसम रेटीकुलेट्म लिन, टेरिस ब्लाउरिटा एल पी विशिएटा एल, सेलीाजिनेला सिलियेरिस (रेट्स) स्प्रिंग पाई गई।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में टेरीडोफाइट्स के 14 फूलों के अन्तर्गत 16 जेनरा से सम्बन्धित 22 प्रजातियां अर्थात एडियान्टम फिलीपेन्स, ए. इन्सीसटम एम्पेलोप्ट्रिस प्रोलीफेरा, अजोला पिन्नाटा, सेराटोप्टेरिस याली क्ट्रोइड्स, सेलाइन्थस बाईकोलर, क्रिस्टेला डेन्टाटा, सी अरीडा सी. पैरासाईटिका, सी एपेन्डीकुलाटा, डिप्लाजियम एस्कुलेटम, ड्राईयोप्टेरिस कोकलिएटा, एक्वीसेटम रेमीसिसीमम, हेल्मिथोस्टेकिस जेनालिा, लाईगोडियम फ्लेक्सुओसम, एल. जापोनिकम, मार्सीलिया मिनुटा, ओफियो ग्लॉसम रेटीकुलेटम, टेरिस ब्लाऊरिटा, पी. विटाटा, माइक्रोलेपिया स्पेलुन्सेई एवं सेलाजिनेला सिलियारिस पाए गए।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान मे डिप्लाजियम एस्कुलेटम, एम्पेलोप्टेरिस प्रोलीफेरा, क्रिस्टेला डेन्टाटा एवं लाईगोडियम फलेक्सुओसम बहुतायत में पाए जाते हैं जबकि केइलान्थस बाईकोलर, क्रिस्टेला एपेन्डीकुलाटा, सी. अरीडा, ड्राईयोपटेरिस कोकलियाटा, इक्वीसेटम रामोर्सिसीमम, लाईगोडियम जोपोनिकम एकल इलाके में दुर्लभा टेक्सा की तरह पाए जाते हैं।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में 11 कुल व 11 जेनरा से सम्बन्धित 14 प्रजातियां अर्थात एडियान्टम इन्सीसम, अजोला पिन्नाटा, केइलान्थस बाईकोलर, क्रिस्टेला एपेण्डीकुलाटा, सी. अरीडा, सी. डेन्टाटा, ड्राइयोप्टेरिस कोकलिएटा,

इक्वीसेटम रेमोसिसीमम लाईगोडियम जापोनिकम, मार्सीलिया मिनुटा, टेरिस बियाउरीटा, पी. विटाटा, माईक्रोलेपिया स्पेलुन्सेई, सेलाजिनेला सिलियेरिस प्रथम बार नए रिकार्ड की तरह रिपोर्ट किए गए।

किशनपुर वन्यजीव विहार में 7 कुल, 9 जेनरा से सम्बन्धित टेरीडोफाइटस की कुल 11 प्रजातियां पाई गईं।

एम्पेलोप्टेरिस प्रोलीफेरा, डिप्लाजियम एस्कुलेन्टम, लाईगोडियम फ्लेक्सुओसम, ओफियोग्लोसम रेटीकुलेटम बहुतायत में पाए जाते हैं जबकि एडियान्टम इन्सीमम, ए. फिलीपेन्स, सेराटोप्टेरिस थालीक्ट्रोइड्स क्रिस्टेला डेन्टाटा, एक्वीसेटम रामोसीसीमम, ई. डिफ्यूसम, हेल्मिन्थोस्टेकिस जेलानिका, किशनपुर वन्यजीव विहार में दुर्लभ है।

किशनपुर वन्यजीव विहार में 7 कुल, 9 जेनरा की टेरियोडोफाइट्स की कुल 11 प्रजातियां नया रिकार्ड हैं।

कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार में 14 कुल, 16 जेनरा से टेरियोडोफाइटस की 25 प्रजातियां अर्थात एडियाटम कैपिलस–वेनेरिस, ए. एजवर्दी, ए. इंसीसम, ए. फिलीपेन्स, एम्पेलियोप्टेरिस प्रोलीफेरा, अजोला पिन्नाटा, सेराटोप्टेरिस थालीक्ट्रोइडस, केइलान्थस बाईकोल 2, सी एल्बोमार्लिया पैरासीटिका, डिप्लाजियम एस्कुलेन्ट्म, ड्राईपोप्टेरिस कोकलिएटा, एक्वीसेटम रेमोसिसीमम, ई. डिफ्यूसम हेल्मिनथोसटेकिस जेइलानिका, लाईगोडियम फ्लेक्सुओसम, मार्सीलिया मिनुआटा, माइक्रोलेपिया स्पेलुन्केई ओफियोग्लोसम रेटीकुलेटम, टेरिस बियाउरीटा, पी. विटाटा सेलाजिनेला सिलियारिस पाए जाते हैं।

कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार में एम्पेलियोप्टेरिस प्रोलीफेरा, एडियान्टम फिलीपेनस, लाईगोडियम फ्लेक्सुओसम, ओफियोग्लोसम रेटीकुलेटम बहुतायत में जबकि एडियान्टम केपिलस–वेनेरिस, ए. एजवर्दी, अजोला पिन्नाटा, केइलान्थस एल्बोमार्जिनाटा, सी.बाईकोलर, एक्वीसेटम डिफ्यूसम, ड्राईयोप्टेरिस कोकलिएटा, माइक्रोलेपिया स्पेलुन्सेई दुर्लभ हैं।

कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार में 14 कुल, 16 जेनरा की टेरीडोफाइटस की 25 प्रजातियां प्रथम बार पाई गईं।

सम्पूर्ण क्षेत्र (दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, किशनपुर वन्यजीव विहार, कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार) में एडियान्टम केपिलस वेनेरिस, ए. एजवर्दी, ए. इन्सीसम, अजोला पिन्नाटा, केइलान्थस एल्बोमार्जिनाटा, क्रिस्टेला एपेन्डीकुलाटा, सी, अरीडा, सी. डेन्टाटा, ड्राईयोप्टेरिस कोकलिएटा, एक्वीसेटम, रामोसीसमम, ई डिफ्यूसम, लाईगोडियम जापोनिकम, मार्सीलिया मिनुटा, टेरिस बियाउरीटा, पी. विटाटा एवं सेलाजिनेला सिलियेरिस पाया जाना एक नया रिकार्ड है ।

टेरीडोफाइटस पॉच प्रजातियों अर्थात एडियान्टम फिलीपेन्स, क्रिस्टेला डेन्टाटा, ड्राईयोप्टेरिस कोकलिएटा, माइक्रोलेपिया स्पेलुन्सेई तथा टेरिस बियाउरीटा की इन विट्रो अध्ययन व पुनर्जनन जीवविज्ञान संचालित किया गया।

सम्पूर्ण दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, किशनपुर वन्यजीव विहार, कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार के सम्पूर्ण क्षेत्र ब्रायोफाइट्स के 197 नमूने चिन्हित किए गए। इनके चिन्हीकरण में 21 कुलों के 25 जेनरा से सम्बन्धित 32 प्रजातियां अर्थात अस्टेरलिया अंगुस्टा एसटी ए. पाठानकोटेन्सिस कश्यप, ए. वालीचियाना (लेहम एण्ड लिंडनेवा) ग्रोले, ब्रोकाईथेसियम प्रजाति, कोलोलेजिउनिया लेटीलोबुआ (स्प्रस) शीफिन, सिआथोडियम कावरनारम कुंज,

डिट्रीकम टाट्रिफस मिंट कुंट्ज, फिजीडेंस मिटेनी पार, एफ. रेजेड्यूसकुलस, ब्रोथ, फोसोम्ब्रोमिया, हिमालयन्सिस कश्यप, हायोफिला रेवोल्यूटा, आईसोप्टेरीजियम एलेगन्स (ब्रिड) लिंडेनब, मर्चेटिया जेम्मीनाटा नीस, एम. लाईनेरिस, ऑक्सीसटेगस स्टेनोफिलस (मिंट) गांगुली, फाएओसेरॉस, कारोलिनिया (माईक्स) प्रोसोक, फिलोनोटिस मॉलिस (डॉज एण्ड मॉल्फ) मिंट, फाईस्कोयिट्रियम, यूरीस्टोमम सेण्डटन, प्लाजियोचा, स्पेन्डीकुलेटम एल. एट. एल., प्लेक्टोकोलिया रूबीपक्टाटा, टेरोब्राथोप्टेसिस प्रजाति, रेबाउलिया हेमिस्फेरिका (एल) रडाई, रिक्किया, फ्लूटांस एल, आर, डिस्कॉलर, आर बिलारडियरी मॉट, आर. कावेरनोसा, हॉफिम, रिसियोकार्पस नाटान्स कोर्डा, सेमीबारबुला रानुई, गांगुली, स्टीरियो फाईलम प्रजाति टेक्सीथेलियम नेपालेंस (शिवार्ग) ब्राथ, थूडियम स्पर्सीफोलियम (मिंट), जैग, टी स्क्वाटोसलम रेन एण्ड कोर्ड 16 हेपाटिसेई, 16 एन्थोसीरोटे एवं 15 मॉन्स खोजी गई।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में 18 कुल के अन्तर्गत 21 जेनरा से सम्बन्धित ब्रायोफाईट्स की 28 प्रजातियां पाई जाती हैं। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान के ब्रायोफ्लोरा के साथ ही समस्त 28 प्रजातियां प्रथम बार खोजी गई हैं।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में सियाथोडियम केवरनरम, प्लेजियोचाश्मा एपेन्डिकुलेटम, फिसीडेन्स मिटेनी, आइसोप्टेरीजियम एलीगन्स, साईकोमिट्रियीम यूरिस्टोमम, टेक्सीथेलियम नेपालेन्स, सेमीबारबुला रानुई, हाइयोफिला रीवोल्यूटा बहुतायत में जबकि गरकेशिया जेमीनाटा, एम. माइनियेरिस अस्टरेला अंगुस्टा, ए. पठानकोटेनसिस, ए. वालीचियान्स, फेमिओसेसेस कारोबिनियानस, रीबाउलिया हेमिस्फेरिका, प्लेक्टोकोलिया सब्रीपंक्टाटा, रिकिया फ्लूटंस, आर. डिस्कलर, आर. बिलारडियरी, फिजीडेन्स रेजेडियसकुलस, फिलोनोटिस मोलिस, डिरिकमनिया टोर्टिप्स, ब्रेकीथेसियम, फूइडियम स्परशीफोलियम, टी. स्क्वारोसुलभ एवं ऑक्सीस्टेगस स्टेनोफाईलस दुर्लभ टेक्सा है।

किशनपुर वन्यजीव में 8 कुल एवं 9 जेनरा से सम्बन्धित 10 प्रजातियां अस्टरेला पठानकोटेन्सिस, फिसीडेन्स मिटेनी, मरकेशिया लिनारिस, प्लेजियो चाश्मा, एपेन्डीकुलाटम, अस्टेरेला पठान कोटेन्सिस एकल इलाके में दुर्लभ टेक्सा की तरह पाए जाते हैं जबकि शेष प्रजाति 2 या 3 इलाकों में पाई जाती है तथा किशनपुर वन्यजीव विहार के लिए सामान्य टेक्सा मानी जाती है। 8 कुलों व 9 जेनरा से सम्बन्धित ब्रायोफाइटस की कुल 10 प्रजातियां किशनपुर वन्यजीव विहार के लिए नया रिकार्ड है।

कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग में 13 कुल, 14 जेनरा से सम्बन्धित कुल 15 प्रजातियां अर्थात् कोलोलीज्यूनिया लेटीलोबुला (स्प्रूस) शिफिन, स्याथोडियम कवरनारम कुंजे फिजीडेन्स मिटेनी पार फोसोम्ब्रोनिया हिमालयन्सिस कश्यप, मर्केशिया लिनारिस, फिलोनोटिस मॉलिस (डॉज एण्ड माल्क) मिंट, साइकोमिट्रियम यूरोस्टोमम सेंडथ, प्लेजियोचाश्मा एपेण्डिकुलेटम एल, आर.केवरनोसा हॉफिम, रिकीकारपसनाटस कोर्डा, सेमीबारबुला रामुई गांगुली स्टीरियोफाईलम, टेक्सीथेलियम नेपालेन्स (स्वार्ज), ब्राथ प्रजाति कुइडियम स्पारसीफोलियम (मिंट) जोएग अभिलिखत की गई है।

कतर्नियाघाट वन्यजीव प्रभाग में रिकिया फ्लूइटान्स, कोलोलेज्यू, लेटीलेबुला, स्टीरियोफाईलम प्रजाति, फोसोम्ब्रोनिया हिमालयान्सिस, रिक्कीकारपस नटान्स एकल इलाके में दुर्लभ टेक्सा की तरह पाया जाता है जबकि फिसीडेन्स मिटेनी, साइकोमिट्रियम यूरिस्टोमम, फिलोनाटिस मॉलिस, सेमीबारबुला रानउई, रिकिया कावरनोसा कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार में 4–5 इलाकों में सामान्य प्रजाति की तरह पाया जाता है।

कतर्नियाघाट वन्यजीव विहार में ब्रायोफाइट्स के 13 कुल, 14 जेनरा की 15 प्रजातियां नया रिकार्ड है।

टेरीडोफाइट्स एवं ब्रायोफाइट्स की फोटोग्राफिक प्लेटे व रेखाचित्र उनके चिन्हीकरण की जानकारी देने हेतु तैयार की गई है।

टेरीडोफाइट्स के सम्बन्ध में इथनों बॉटनिकल सूचना एवं थारू आदिवासियों के सम्बन्ध में इथनो बॉटनिकल की सूचना एकत्र की गई। कुल 14 टेरीडोफाइटिक प्रजातियां अर्थात एडिआण्टम कैपिलस–वेनेरिस (हंसराज), एडिआण्टम फिलीपेन्स (हंसवती, कांते आर, काली सुंधिया), एम्पेलोप्टेरिस प्रोलीफेरा (कोचिया, माछी–न्यूर), सेराटोप्टेरिस थालीक्ट्रोइडेस (सेवाली–झाड), क्रिस्टेला डेंटाटा (मकरगोरवा), क्रिस्टेला पैरासिटिका (माछी न्यूर, लिम्रा), डिप्लाजियम एसकुलेन्टम (कोचिया, लुकडा धेकी, पानी–न्यूर), एक्वीसेटम रेमोसिसीमम (जोड–तोड़ अंरवचिमका), हेल्मिन्थोस्टाकिस जेलानिका (कामराज, मजूर कुट्टी, मजूरपेयर, बंदकांड, झोटपोखरी), लाईगोडियम फ्लेक्सुओसम (धेंगराजुआ, नीम–झाड, बिस्मा), मार्सीलिया मिनुआटा (चिल–चिलझाड़), माइक्रोलेपिया स्पेलुन्सेई, ओफियोग्लोसम रेटीकुलेटम (जिमी, जिब्रा, एक पतिया, जिबिया) एवं टेरिस ब्लाउरिटा पाए जाते हैं जिसे थारू जनजाति द्वारा भोजन, चारा, औषधि एवं अन्य व्यंजन के रूप में बड़े स्तर पर उपयोग किया जाता है।

7. उत्तर प्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों में लाईकेन खोज एवं संरक्षण हेतु स्टेकहोल्डर्स को संवेदनशील बनाना शीर्षक परियोजना को राष्ट्रीय वानस्पातिक अनुसंधान संस्थान लखनऊ ने प्रायोजित किया।

इस परियोजना के अन्तर्गत तीन जैव विविधता कार्यशालाएं आहूत की गई तथा उत्तर प्रदेश के कुल 07 जनपद में लाईकेन एकत्रीकरण हेतु अन्वेषण किया गया। श्री वी0के0 सिंह, भा0व0से0, उप निदेशक द्वारा दुधवा टाईगर रिजर्व के जैवविविधता जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। श्री वी0के0 सिंह, वन रक्षक, वन रेंजर, प्रभागीय बनाधिकारी, वन्य जीव प्रतिपालक, वन्यजीव रक्षक, उपराजिक, किशनपुर, मैलानी, उत्तर सोनारीपुर, दुधवा, पर्यटन, बेलरायां, गौरीफंटा, सठियाना, पहियां में कार्यरत सहायक स्तर के कुल 53 अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्रतिभागियों ने कार्यशाला में प्रतिभाग किया। डॉ0 डी0के0 उप्रेती को एस0 नायका एवं डॉ0 आर0 बाजपेयी रिसोर्स पर्सन थे। श्री वी0के0 संह ने रिसोर्स पसर्नन एवं समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ0 उप्रेती ने प्रतिभागियों को लाईकेन पर परिचयात्मक व्याख्यान दिया। जबकि डॉ0 नायका ने लाइकेन पर परिचयात्मक व्याख्यान दिया। जबकि डॉ0 नायका ने लाइकेन के विशिष्ट सन्दर्भ में उत्तर प्रदेश की जैवविविधता का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। डॉ0 बाजपेई ने वायु प्रदूषण अनुश्रवण अध्ययन में लाइकेन्स के उपयोग पर व्याख्यान दिया। प्रतिभागियों को लाइकेन के वास्तविक नमूने दिखाए गए। लाईकेन पर विभिन्न पोस्टर प्रदर्शित किए गए। प्रतिभागियों ने अपनी रूचि प्रदर्शित करते हुए विशेषज्ञों से उत्सुकता पूर्वक कई प्रश्न पूछे। कार्यशाला के सम्बन्ध में फीडबैक परीक्षण सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले सी0वी0पी0 सिंह (वन दरोगा, पर्यटन) एवं तुलसी राम दोहरे रेंज फारेस्ट ऑफीसर) पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। समस्त प्रतिभागियों को कांफ्रेस किट एव प्रतिभाग हेतु प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

श्री प्रदीप पाण्डेय, प्रधानाचार्य के सहयोग से जैवविविधता जागरूकता की एक अन्य कार्यशाला मेवालाल राम दुलारी विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में कक्षा 9 व 11 के कुल 98 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। विद्यार्थी इच्छुक व उत्साहित थे। डॉ0 यू0के0 उप्रेती, डॉ0 एस. नायका एवं डॉ0 आर0 बाजपेयी

रिसोर्स पर्सन को डॉ0 उप्रेती ने विद्यार्थियों के समक्ष लाईकेन व उनके महत्व पर सम्पूर्ण परिदृश्य का प्रस्तुतिकरण किया। डॉ0 नायका ने उत्तर प्रदेश की जैवविविधता पर विस्तार से उत्तर प्रदेश के सन्दर्भित क्षेत्रों में लाइकेल अन्वेषण एवं स्टेकहोल्डर्स को संरक्षण के लिए संवेदनशील बनाना। प्रकाश डालते हुए राज्य में लाइकेन की स्थिति रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण किया।

डॉ. बाजपेई ने विद्यार्थियों को वायु प्रदूषण अनुश्रवण अध्ययनों में लाईकेन के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया। कार्यशाला के सम्बन्ध में फीडबैक परीक्षण में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर सुश्री मंदीप कौर (कथा 9 ए) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि श्री मुहम्मद अदनान खान (कथा 11 बी) एवं श्री मुनीष गुप्ता (कक्षा 9 ए) को सालना पुरस्कार प्राप्त हुआ। समस्त विद्यार्थियों को सहभागिता प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

वनस्पति शास्त विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित जैवविविधता जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का समन्वय प्रो0 अनुपम दीक्षित ने किया तथा इसमें एम0एस0सी0 में अध्ययन व शोध कर रहे 124 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। प्रो0 आर0के0 पाण्डेय, अध्यक्ष, मध्यप्रदेश प्राइवेट विश्वविद्यालय निमंत्रण आयोग, भोपाल ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यशाला का शुभारम्भ किया। प्रो0 अनुपम दीक्षित ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ0 संजीव नायका ने कार्यशाला का महत्व विस्तार से बताया। प्रो0 ए0के0 पाण्डेय ने शुभारम्भ 'मशरूम' भारत में कुपोषण से लड़ने के लिए क्षमतावान स्त्रोत विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यशाला में व्याख्यान की श्रृंखला में डॉ0 एल0बी0 चौधरी द्वारा 'जैवविविधता एक परिचय', डॉ0 एस0 नायका द्वारा' भारत व उत्तर प्रदेश में लाइकेन की विविधता एवं वितरण',डॉ0 विजय बाघ द्वारा 'मानव कल्याण में मानव वनस्पतियों सत्र', डॉ0 अजीत पी0सिंह द्वारा ब्रायोफाइट्स व टेरीडोफाइट्स की विविधता एवं महत्व प्रो0 जी0एल0तिवारी द्वारा साइनोबैक्टीरिया के विशिष्ट सन्दर्भ में काई (एलगी) की विविधता एवं डॉ0 मुहम्मद आरिफ द्वारा 'रक्षा व्यक्तियों के कल्याण के लिए जैवविविधता विषयों पर व्याख्यान दिए गए। समापन सत्र में छात्रों को प्रतिभागिता का प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

कटहल वृक्ष पर क्रस्टोसे की वृद्धि

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बिजनौर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, रामपुर, सहारनपुर व शाहजहांपुर जनपदों में एक सप्ताह की अवधि का लाइकेन अध्ययन भ्रमण आयोजित किया। लाईकेन के लगभग 70 नमूने एकत्र किए गए। इन लाईकेन्स की पहचान में 25 नमूने क्रस्टो लाइकेन्स के पाए गए। हाईपरफिर्ईसिया एडग्लूसीनाटा, एच, सिनकोल, फाईसिया डिमीडाटा, नाईक्सीन कोकोएस, पी रेटीकुलाटा ही पत्तीदार लाइकेन के पूर्व में पीलीभीत जनपद में लाईकेन की केवल 2 प्रजातियां अभिलिखित की गई थी जबकि इस

साल वृक्ष पर क्रस्टोसे लाईकेन की प्रचुर वृद्धि

अध्ययन में 15 प्रजातियों का प्रतिनिधित्व पाया गया। शेष समस्त जनपदों में लाइकेन्स का यह प्रथम अभिलेखीकरण है। जनपद में प्राकृतिक वनस्पति न्यून है। केवल पीलीभीत में वन क्षेत्र हैं तथा यहाँ लाईकेन की अच्छी विविधता है। अन्य शेक्ष क्षेत्रों में आम के बागों की प्रमुखता है।

सारणी–1 में समस्त जनपदों के लाईकेन संकलित है। यह पूर्णरूप से चिन्हित 27 प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करता है। उल्लेखनीय है कि अर्कोकेलियम कियोडेक्टरोइड्स (नाइल) जल्हौर, डियोराईग्मा, सूजोनम (जल्हौर), एम. नाकन एवं काशिव, ग्राफिस पाइरो-केइलायड्स जल्हौर, ओपेग्राफा माइक्रो-स्पोरा मुल आर्ग, पाईक्सीन रेटी कुलासा (वेज) उत्तर प्रदेश में प्रथम बार अभिलिखित की गई है।

सारणी 1 : पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 8 जनपदों में एकत्र किए लाईकेन्स की सूची

(टिप्पणी + = उपस्थित, – = अनुपस्थित, ~ = उ0प्र0 के लिए नवीन अभिलिखित)

	प्रजाति का नाम	पश्चिमी उत्तर प्रदेश							
		बिजनौर	मेरठ	मुरदाबाद	मुजफरनगर	पीलीभीत	रामपुर	सहारनपुर	शाहजहॉपुर
1	'आर्थोथेलियम एबनोर्मे (ऐश) मुल. आर्ग	-	-	-	-	+	-	-	-
2	ए. केइयोडेक्टोइड्स (नाइल) जहल्बर	-	-	-	-	+	-	-	-
3	बेसीडिया इनकॉनग्रुएन्स (स्टिअर्ट) जहल्बर	-	+	-	+	+	-	+	+
4	बी. मेडिएलिस (टक) जहल्बर	-	+	-	-	-	-	-	-
5	बी. मिलेग्राना (टाइलर) जहल्बर	+	-	+	-	+	+	+	+
6	बी. स्पेडिसिया (ऐश) जहल्बर	-	-	-	-	-	-	+	-
7	बी. सबमेडियालिस (नाइल) जहल्बर	-	-	-	-	-	+	-	-
8	बेसीडियोसपोरा सोरीना नाईल एक्स हयू	-	+	-	-	-	-	-	-

	प्रजाति का नाम	पश्चिमी उत्तर प्रदेश							
		बिजनौर	मेरठ	मुरदाबाद	मुजफरनगर	पीलीभीत	रामपुर	सहारनपुर	शाहजहॉपुर
9	ब्युलिया डिसीफोरमिस (फ्र) मड	-	-	-	-	+	-	-	-
10	केलोप्लाका बेसिये (ऐश) जहल्बर	+	+	+	+	+	-	+	-
11	क्राईसोथ्रिक्स क्लोरीना (ऐश) जे.आर. लाउन्डन	-	-	-	+	-	-	-	-
12	'डाइओराईग्मा सूजानम (जहल्बर) एम. नाकन एवं काशिव	-	-	-	-	+	-	-	-
13	डाईरिनारिया एईजियालिटा (अफजल) मूरे	-	-	-	-	+	-	-	-
14	डी. कॉन्सीमिलिस (स्टिरट) डी.डी. अवस्थी	-	-	-	-	+	-	-	-
15	'ग्राफिस पाईरोकेइलोइड्स जहल्बर	-	-	-	-	+	-	-	-
16	हाईपरफाईसिया एबुग्लूशिनाटा (लार्क) एच. माईरोफर एवं पोएल्ट	+	+	+	+	-	+	+	-
17	एच. सिनकोला (टक. एक्स. नाईल) कल्ब	-	-	-	-	+	-	-	-
18	ल्केानोरा एकोआ नाईल	-	-	+	-	+	-	+	-
19	एल. हेल्वा स्टिजनेब	+	-	-	-	+		+	-
20	एल. ट्रापिका जहल्बर	+	-	-	-	-	-	-	-
21	ओपेग्राफा अस्ट्रेइया टक	-	+	+	-	+	-	-	-
22	'ओ. माईकोसपोरा मुल. अर्ग	-	-	-	-	-	-	-	+
23	ओ. वारिया पर्स	-	+	-	-	-	-	-	-
24	फाईसिया डिमीडियाटा (एम.) नाईल	-	-	-	-	-	-	+	-
25	पाईक्सीन कोकोएस (एस. डब्लू.) नाईल	+	+	+	+	+	+	+	+
26	'पी. रेटीकुलाटा (बेन.) वेन	-	-	-	-	-	-	+	-
27	रिनोडीना सोफोडेस (ऐश) ए. मसाल	-	+	+	+	-	-	+	+

(ग) नवीन परियोजनाएं -

बोर्ड द्वारा निम्न परियोजनाएं दो वर्षों की अवधि के लिए स्वीकृत की गई।

ØE lE	ifj;kstuk dk uke	lLFkku dk uke	ifj;kstuk dh dqy ykxr ¼yk[k :0 e½
1.	एन एनोटेड कलर्ड चेकलिस्ट ऑफ बटरलाईज ऑफ उत्तर प्रदेश इण्डिया।	लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226007	20.108
2.	टेक्सोकिक स्टडी ऑफ दि ट्री लोरा ऑफ उत्तर प्रदेश	राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान (सी0एस0आई0आर) राना प्रताप मार्ग, लखनऊ–226001	10.143

अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस, 2014

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड ने डा0 राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के परिसर में 22 मई, 2014 को अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस (आई बी डी 2014) को समारोह पूर्वक मनाया। इस अवसर पर 'द्वीप जैवविविधता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विभिन्न अनुसंधान/संस्थानों, विश्वविद्यालय, उ0प्र0 वन विभाग व अन्य प्रदेश के अधिकारियों एवं स्वैच्छिक संस्थानों आदि को शामिल करते हुए 400 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस संगोष्ठी का उदघाटन मुख्य अतिथि डा. एस.डब्लू.ए. नकवी निदेशक, इण्डियन इन्स्टीटयूट ऑफ ओसियोनोग्राफी, गोवा द्वारा किया गया। उन्होनें भारत के कोरल रीफस के विभिन्न आयामों के सम्बन्ध में प्रकाश डाला।

जे.एस. अस्थाना

श्री जे.एस. अस्थाना, प्रमुख वन संरक्षक, उ0प्र0 ने संगोष्ठी में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा कि वर्ष 2014 को संयुक्त राष्ट्र संगठन ने अन्तर्राष्ट्रीय द्वीप जैवविविधता दिवस के रूप में घोषित किया। उन्होंने कहा कि घरेलू सीवेज, औद्योगिक इकाइयों का सीवेज एवं कृषि क्षेत्र में प्रयोग होने वाले रसायनों एवं कीटनाशकों नदियों के माध्यम से समुद्र के पानी में मिश्रित हो रहा है जिससे हमारे द्वीपों की जैवविविधता खतरे में है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा कि ग्रीन हाउस गैसेस के उत्सर्जन तथा ग्लेशियरों के पिघलने के कारण कहीं न कहीं मानव जाति जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि अगर यह क्रम नहीं रुका तो समुद्र में जल का स्तर बढ़ने से द्वीपों की जैवविविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। भारत दुनिया के 12 वृहद् जैवविविधता वाले देशों में से एक है। पृथ्वी पर लगभग 15,00,000 प्रजातियां पायी जाती हैं जिसमें हमारे देश में लगभग 1,28,000 प्रजातियां पेड़–पौधे व जीव–जन्तुओं की पायी जाती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि भारत में 2 हॉट स्पॉट हैं जिनके संरक्षण के लिए विश्व स्तर पर प्रयास किया जा रहा है।

वी.एन.गर्ग

श्री वी.एन.गर्ग, प्रमुख सचिव, वन व अध्यक्ष, उ0प्र0 राज्य जैवविविधता बोर्ड ने कहा कि जैवविविधता संरक्षण के लिए प्रदेश में विद्यार्थियों व ग्रामसभाओं की सक्रिय सहभागिता है। उन्होंने बताया कि सोनभद्र जनपद में पर्यावरण प्रदूषण के कारण स्थानीय निवासियों में फैल रही टी.बी. व कैंसर जैसी बीमारियों का उल्लेख करते हुए पर्यावरण क्षरण को रोकने की आवश्यकता बताई है। उन्होनें यह भी कहा कि जैवविविधता संरक्षण के लिए विकास व पर्यावरण मध्य समन्वय, विकास कार्यों में जैवविविधता को न्यूनतम क्षति व विकास के नाम पर पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही कर पक्षियों, सरीसृपों, डाल्फिन, वनस्पतियों के अस्तित्व पर उत्पन्न संकट का निराकरण कर सकते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि जैवविविधता के संरक्षण के लिए जैवविविधता अधिनियम, 2002 के महत्व का व्यापक प्रचार प्रसार उ0प्र0 के प्रत्येक गाँव में किया जाना चाहिए तथा स्थानीय सभी 53,000 ग्राम सभाओं में

जैवविविधता प्रबन्धन समिति का निर्माण व प्रत्येक ग्राम सभा में एक जैवविविधता पंजिका का निर्माण किया जाना चाहिए।

अनुकूल जैवविविधता के लिए हमें निम्न प्रकार से मिलजुल कर कार्य करना चाहिएः–

1. सरकारी विभाग एवं एजेसिंयां
2. स्थानीय समुदाय
3. स्थानीय संस्थायें और नगर निगम तथा जिला पंचायत
4. सरकार द्वारा समर्थन प्राप्त जेएफएम समितियां तथा ईडीसी
5. कम्पनियां एवं व्यवसाय

उन्होंने अन्त में यह भी कहा कि उ0प्र0 राज्य में सी.ई.ई., उ0प्र0 प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा उ0प्र0 राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा तीन मुख्य पहलुओं पर इस वर्ष कार्य किया जायेगाः–

1. लखनऊ जिले में जैवविविधता से सम्बन्धित एक बस का चलाया जाना।
2. पर्यावरण यूथ लीडरशिप अवार्ड
3. लखनऊ चिड़ियाघर में व्याख्यान केन्द्र की स्थापना

पवन कुमार

श्री पवन कुमार, सचिव, उ0प्र0 राज्य जैवविविधता बोर्ड ने अपने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय जैव जैवविविधता दिवस 2014 के विषय द्वीप जैवविविधता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2011–2020 के दशक को जैवविविधता दशक घोषित किये जाने के परिप्रेक्ष्य में प्राकृतिक संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका व आवश्यकता का संदेश जन–जन तक पहुँचा कर जन जागरूकता व जन सहभागिता का निर्माण करना है। उन्होनें अपने आकर्षक स्लाइडों के माध्यम से जैवविविधता तथा उसके विभिन्न स्तरों जैसे– आनुवांशिक जैवविविधता, प्रजाति जैवविविधता एवं पारिस्थितिकी तंत्र जैवविविधता को परिभाषित किया। उन्होनें कहा कि हमारे देश जैवविविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है।

उन्होनें वर्ष 1992 में रियो में आयोजित कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डाईवर्सिटी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत में हमारी जैवविविधता धरोहर के आँकड़ों के बारे में भी अवगत कराया। एक दिलचस्प तथ्य भी बताया कि हेलिक ओलैण्ड एक छोटा सा द्वीप है जिसमें 30 लोग एक साथ रहते हैं। विश्व में कुल 36 जैवविविधता आकर्षण केन्द्र मौजूद हैं जिनमें से छः द्वीप हैं। मारिशस के विलुप्त हो चुके पक्षी डोडो का उदाहरण देते हुए द्वीपों की जैवविविधता के समक्ष उत्पन्न खतरे का वर्णन करते हुए उन्होनें कहा कि समस्त प्रजातियों की सुरक्षा के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।

डा० गुरूदीप सिंह,

डा0 गुरूदीप सिंह, कुलपति, डा0 राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय ने पर्यावरण प्रदूषण करने हेतु किये गये राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय

प्राविधानों से अवगत कराया। इस अवसर पर जैवविविधता सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों का क्रमवार उल्लेख करते हुए अम्लीय वर्षा, अम्लीय वायु, समुद प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत का क्षरण मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों व कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रित करने हेतु किये गये राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय विधिक प्राविधानों से अवगत कराया।

डा० नकवी

डा. नकवी, निदेशक, नेशनल इन्स्ट्टीयूट ऑफ ओसियोनोग्राफी, गोवा ने कहा कि पृथ्वी व उसके निकटवर्ती ग्रहों–वीनस व मंगल में विद्यमान गैसों का तुलनात्मक हमारे धरती के वातावरण में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन व 21 प्रतिशत आक्सीजन है। जबकि वीनस व मंगल ग्रहों में क्रमशः 35 प्रतिषत व 27 प्रतिशत नाइट्रोजन एवं शून्य व 0.13 प्रतिशत आक्सीजन है। कोरल रीफ के विशेष संदर्भ में समुद्री जैव का उल्लेख करते हुए कहा कि समुद्र में जीवन का जन्म स्थल से पहले हुआ तभी भौतिक रासायनिक पर्यावरण की वृहद् किस्मों के कारण समुद्र में स्थल की अपेक्षा प्राणि जगत विविधता अधिक है। समुद्र में 14 एण्डेमिक फाईला व 2,30,000 वनस्पति व जन्तु प्रजातियां पाई जाती हैं। कोरल रीफ के लाभ, पारिस्थितिकीय एवं प्रकार का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कोरल रीफ के समक्ष मानव जाति खतरों में जलवायु परिवर्तन, समुद्र तटों का क्षरण, मछलियों का अत्याधिक शिकार, मनोरंजन एवं अम्लीकरण प्रमुख हैं। डा. नकवी ने कहा कि पृथ्वी में मुख्यतया जीवाष्म ईंधन, समुद्र व कार्बोनेट सेंडीमेंटस के रूप में कार्बन जमा है।

प्रो० बी० सी० चौधरी

प्रो0 बी.सी. चौधरी, (सेवानिवृत्त), वाइल्ड लाईफ इन्सट्टीयूट ऑफ, देहरादून ने वॉलेस डारविन से ई.ओ. विल्सन तक के इतिहास को अपने व्याख्यान में प्रस्तुत किया। उन्होंने यह भी परिभाषित किया कि द्वीप क्या हैं तथा उनका आरम्भ कहाँ से हुआ। प्रो0 चौधरी ने द्वीपों को कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया तथा विभिन्न द्वीपों में प्रजातियों को विलुप्त होने के खतरे से भी अवगत कराया। उन्होंने द्वीप जैवविविधता को बताने के लिए गैलापोगास द्वीप का उदाहरण भी दिया। अपने प्रस्तुति की निरन्तरता में प्रो0 चौधरी ने लक्षद्वीप में जैवविविधता के कई उदाहरण प्रस्तुत किये। उनका प्रस्तुतिकरण द्वीपों की सुन्दर चित्रों के साथ सम्पन्न हुआ।

डॉ० दीपक आप्टे

डा0 दीपक आप्टे, चीफ आपरेटिंग आफिसर, बी.एन.एच.एस. ने व्याख्यान में समुद्री एवं तटीय जैवविविधता का एक सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जैवविविधता के लिए खतरा बनता जा रहा भारत के तटीय रेखा के साथ विकासात्मक गतिविधियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। डा. आप्टे ने समुद्री जैवविविधता का संक्षिप्त आँकड़े भी प्रस्तुत किये।

श्रीमती मिताली कक्कड़, फाउण्डर, संस्थापक, रीफ वॉच मैरीन कन्जरवेशन ने अपनी फिल्म ''ट्रबल्ड वॉटर'' के माध्यम से द्वीप जैवविविधता पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होने बताया कि तापमान वृद्धि का मुख्य कारण रीफ

पारिस्थितिकीय तंत्र पर अलनीनों का प्रतिकूल प्रभाव था। मूँगे की चट्टान पारिस्थितिकीय तंत्र संवेदनशील पारिस्थितिकीय तंत्र है जो समुद्र सतह का तापमान बढ़ने से क्षतिग्रस्त होते हैं। श्रीमती कक्कड वर्ष 1995 से निरन्तर मूँगा की चट्टानों का फिल्मांकन कर रही

श्रीमती मिताली कक्कड

श्री राउफ अली

श्री राउफ अली, फेरल, पांडिचेरी ने द्वीपों में इनवेसिव एलियन स्पीशीज पर प्रस्तुतिकरण किया। उन्होंने इनवेसिव एलेइन स्पीसीज को परिभाशित किया। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने कई इनवेसिव प्रजातियों का उदाहरण भी दिया। अन्त में उन्होंने यह भी बताया कि भारत उन देशों में से है जिसमें अभी इनवेसिव प्रजातियों की कोई भी नीति नहीं बनायी गयी है।

डॉ० ए० आर० टी० आरसू

डॉ० ए० आर० टी० आरसू , ने धुला हुआ मूँगा व लक्षद्वीप की क्षरित होती जैवविविधता की पिक्चर दिखायी। यद्यपि नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओसियानोग्राफी द्वारा प्रत्यारोपण द्वारा मृत मूँगों की पुनर्यवा के महान प्रयास किए हैं। लक्षद्वीप क्षेत्र में प्रत्यारोपण सफल रहा। उन्होंने कहा कि मूँगा जैवविविधता को पुनः भरने हेतु समुचित सिम्बियोटिक एनीमोन्स एवं मूँगा प्राप्त करने हेतु प्रयासों की आवश्यकता है।

डॉ० ध्रुव सेन सिंह

डॉ० ध्रुव सेन सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय ने जलवायु परिवर्तन और द्वीप जैवविविधता पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डा0 सिंह ने जैवविविधता तथा उसके लाभ पर विचार व्यक्त किये। भारत में विश्व के कुल भूमि क्षेत्र का मात्र 2.4 प्रतिशत भाग है किन्तु कुल प्रजातियों का लगभग 8 प्रतिशत यहाँ पाया जाता है।

फोटोग्राफी प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम पुरस्कार : श्री नीरज मिश्रा

द्वितीय पुरस्कार श्री के० प्रवीन राव

तृतीय पुरस्कार : श्री संजय तिवारी

पुस्तक विमोचनः

इस अवसर पर द्वीप जैवविविधता विषय पर एक स्मारिका का विमोचन हुआ। इसके अतिरिक्त डॉ0 वी0डी0 हेगड़े एवं के0 वेंकटरमन, जूलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया कोलकाता द्वारा तैयार पुस्तक 'इन्वेंटरी ऑफ फानल डाईवर्सिटी ऑफ उत्तर प्रदेश का भी विमोचन हुआ। इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश के प्राणि प्रजातियों को भी शामिल किया गया है। नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद के डॉ0 शिवपूजन सिंह द्वारा लिखित पुस्तक' कुकरबिट्स, बायोडाईवर्सिटी, ब्रीडिंग एण्ड प्रोडक्शन इन उत्तर प्रदेश' का भी विमोचन किया गया।

द्वीप जैवविविधता विषय पर स्मारिका का विमोचन

इन्वेंटरी ऑफ फानल डाईवर्सिटी ऑफ उत्तर प्रदेश' का विमोचन

कुकरबिट्स बायोडाइवर्सिटी, ब्रीडिंग एण्ड प्रोडक्शन इन उत्तर प्रदेश
नामक पुस्तक का विमोचन